



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 46]

नई दिल्ली, मंगलवार, मार्च 12, 2013/फाल्गुन 21, 1934

No. 46]

NEW DELHI, TUESDAY, MARCH 12, 2013/PHALGUNA 21, 1934

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 12 मार्च, 2013

अंतिम जांच परिणाम

विषय : चीन जन.गण. और जापान के मूल के या वहां से निर्यातित "पैरोक्सोसल्फेट्स" (जिसे "परसल्फेट्स" के नाम से भी जाना जाता है) के आयातों के बारे में मध्यावधि समीक्षा पाटनरोधी जांच ।

सं. 15/9/2011-डी जी ए डी.—समय-समय पर यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975(जिसे आगे अधिनियम भी कहा गया है) और समय-समय पर यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का निर्धारण एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे नियमावली भी कहा गया है), को ध्यान में रखते हुए;

क मामले की पृष्ठभूमि

1. यतः निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे प्राधिकारी भी कहा गया है) ने अधिनियम और नियमों को ध्यान में रखते हुए चीन जन.गण. और जापान (जिन्हें आगे संबद्ध देश भी कहा गया है) के मूल के या वहां से निर्यातित "पैरोक्सोसल्फेट्स" जिसे "परसल्फेट्स" के नाम से भी जाना जाता है, (जिसे आगे संबद्ध वस्तु भी कहा गया है) के आयातों पर 20 जुलाई, 2007 की अंतिम जांच परिणाम संबंधी अधिसूचना सं. 14/1/2006-डी जी ए डी के तहत मूल जांच में निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की थी ।

2. यतः केन्द्र सरकार ने 29 अगस्त, 2007 की अधिसूचना सं. 96/2007-सी.शु. के तहत संबद्ध देशों के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाया था ।
3. यतः मूल जांच में घरेलू उद्योग के भागस्वरूप भारतीय घरेलू उत्पादकों मै. गुजरात परसाल्ट्स प्रा. लि., मै. कैलीबर कैमिकल्स प्रा.लि., मै. वी आर परसल्टेड्स और मै0 योयो कैमिकल्स ने संयुक्त रूप से संबद्ध देशों के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के पाटन का आरोप लगाते हुए अधिनियम और नियमों के अनुसार प्राधिकारी के समक्ष एक विधिवत पुष्टिकृत आवेदन दायर किया है और संगत पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा करने, इसे जारी रखने और उसमें वृद्धि करने का अनुरोध किया है।
4. घरेलू उद्योग की ओर से दायर विधिवत पुष्टिकृत आवेदन को ध्यान में रखते हुए और नियमावली के नियम 23 के साथ पठित अधिनियम की धारा 9 क (5) के अनुसार प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के बारे में लागू पाटनरोधी शुल्क को सतत रूप से लागू रखने की जरूरत की समीक्षा करने और इस बात की जांच करने कि क्या ऐसे शुल्क को समाप्त किए जाने से पाटन एवं घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है, के लिए 13.3.2012 की अधिसूचना सं. 15/9/2011-डी जी ए डी के तहत निर्णायक समीक्षा (एस एस आर) जांच शुरू की । संबद्ध देशों के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की वैधता केन्द्र सरकार द्वारा 4.4.2012 की अधिसूचना सं0 20/2012-सी.शु. (ए डी डी) के तहत बढ़ाकर 18.3.3013 कर दी गई है ।
5. वर्तमान समीक्षा के दायरे में संबद्ध देशों के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों से संबंधित पूर्ववर्ती जांचों के सभी पहलू शामिल हैं ।

ख. प्रक्रिया

6. संबद्ध जांच के बारे में निम्नलिखित प्रक्रिया का पालन किया गया है:
 - i. नियमावली के नियम 6(2) के अनुसार नई दिल्ली स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को जांच की शुरूआत के बारे में सूचित किया गया था ।
 - ii. उपर्युक्त नियम 6(3) के अनुसार प्राधिकारी ने आवेदन के अगोपनीय रूपांतरण की प्रतियां संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों और दूतावास को उपलब्ध कराई । आवेदन के अगोपनीय रूपांतरण की एक प्रति सार्वजनिक फाइल में भी उपलब्ध कराई गई थी और उसे अनुरोध करने पर अन्य हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराया गया था ।

- iii. प्राधिकारी ने नियम 6(2) और 6(4) के अनुसार सार्वजनिक सूचना की एक प्रति चीन जन.गण. और जापान के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों (जिनके नाम और पते प्राधिकारी को उपलब्ध कराए गए थे) को निम्नानुसार भेजी और उन्हें पत्र की तारीख से चालीस दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अवसर प्रदान किया :

क	फ्यूलिडा इंडस्ट्री कं. लि., चीन
ख	हेबाई जिहेंग ग्रुप कंपनी लि., चीन
ग	शांक्सी बाओहुआ टेक्नोलॉजीज कं. लि., चीन
घ	ड्राई क्लोरीन कार्प (डी सी सी), चीन
ङ	मित्सुया बोइकी लि०, जापान
च	अशाही कसाई फाइन कैप कंपनी लि., जापान
छ	मित्सुबिसी कैमिकल कार्पो. जापान

- iv. संबद्ध देशों के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने कोई उत्तर या अनुरोध दायर नहीं किया है ।
- v. नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मांगते हुए भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को भी प्रश्नावली भेजी गई थी:

1	गुजरात थीमिस बायोसिन लि०,
2	निकोलस पिरामल इंडिया लि०
3	पदमा एर्जेसीज
4	अरविन्दो फार्मा लि०
5	आर्टेक सरफिन कैमिकल्स लि०
6	नोवारटिस इंडिया लि०
7	जिडेक्स इंडस्ट्रीज
8	वीनस इंसुलेटर्स प्रा० लि०

- vi. किसी भी आयातक/प्रयोक्ता/अन्य हितबद्ध पक्षकार द्वारा भी कोई उत्तर/अनुरोध दायर नहीं किया गया है ।
- vii. जिन निर्यातकों, उत्पादकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने प्राधिकारी को न तो उत्तर दिया है और न ही इस जांच से संगत सूचना प्रदान की है, उन्हें असहयोगी हितबद्ध पक्षकार माना गया है ।

- viii. समस्त ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों और चीन जन.गण. के दूतावास को बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार (एम ई टी) प्रश्नावली इस अनुरोध के साथ भेजी गई थी कि वे निर्धारित समय के भीतर प्राधिकारी को संगत सूचना प्रदान करें। हालांकि चीन जन.गण. में सामान्य मूल्य की गणना के प्रयोजनार्थ उस पर भारत में विधिवत समायोजित संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत के आधार पर विचार किया गया था तथापि, प्राधिकारी ने चीन जन.गण. के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को यह सूचित किया कि उनका प्रस्ताव यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 और पैरा 8 के मददेनजर आवेदक के दावे की जांच करने का है। अतः चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु के निर्यातकों/उत्पादकों से यह अनुरोध किया गया था कि वे पैरा 8 के उप पैरा (3) में यथा उल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करें ताकि प्राधिकारी इस बात पर विचार कर सकें कि क्या सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान किया जा सकता है। तथापि, चीन जन.गण. के उत्पादकों/निर्यातकों से इस बारे में कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है।
- ix. जांच अवधि से क्षति अवधि के लिए संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरों की व्यवस्था करने के लिए वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) से अनुरोध किया गया था।
- x. प्राधिकारी ने डी जी सी आई एंड एस से प्राप्त आयात के आंकड़ों और घरेलू उद्योग द्वारा गौण स्रोत अर्थात् आई बी आई एस के आधार पर प्रस्तुत आंकड़ों की तुलना की और इस जांच में डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों पर भरोसा किया। इसके अलावा, घरेलू उद्योग ने जापान से तीसरे देशों को हुए संबद्ध वस्तु के निर्यातों के बारे में जापान सीमाशुल्क के आंकड़े भी प्रस्तुत किए ताकि इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि जांच अवधि के दौरान जापान ने भारत को संबद्ध वस्तु का शून्य निर्यात किया है, जापान से भारत को संबद्ध वस्तु के हुए निर्यात की संभावित कीमत का निर्धारण किया जा सके।
- xi. नियम 6(7) के अनुसार प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतरण सार्वजनिक फाइल के रूप में रखा जिसे हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण हेतु खुला रखा।
- xii. सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जी ए ए पी) के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना के अनुसार भारत में संबद्ध वस्तु की ईष्टतम उत्पादन लागत और उसे बनाने तथा बेचने की लागत निकालने के लिए यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या पाटन मार्जिन से कमतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा, आवेदकों से सूचना मांगी गई थी।

इसके अलावा, प्राधिकारी द्वारा क्षति रहित कीमत का निर्धारण नियमावली के अनुबंध-III में निर्धारित सिद्धांतों के अनुसार किया गया है।

- xiii. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों की मौखिक सुनवाई के लिए 8.2.2013 को एक सार्वजनिक सुनवाई आयोजित की जिसमें केवल घरेलू उद्योग और उसके प्रतिनिधि उपस्थित हुए थे। सुनवाई के समय उपस्थित हितबद्ध पक्षकारों को सलाह दी गई थी कि वे मौखिक रूप से व्यक्त विचारों के लिखित अनुरोध दायर करें और उन्हें उत्तर यदि कोई हो, दायर करने का अवसर भी प्रदान किया गया था।
- xiv. यह जांच 01.01.2011 से 31.12.2011 तक की अवधि (जांच अवधि) के लिए की गई थी और क्षति विश्लेषण वर्ष 2008-09, 2009-10, 2010-11 और जांच अवधि के लिए किया गया है।
- xv. जांच के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों पर प्राधिकारी ने इस जांच परिणाम में संगत समझी गई सीमा तक विचार किया है ;
- xvi. प्राधिकारी द्वारा आवश्यक समझी गई सीमा तक घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों/सूचना का मौके पर सत्यापन किया गया था।
- xvii. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदत्त सूचना की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में की गई थी। संतुष्ट होने के उपरान्त प्राधिकारी ने जहां अपेक्षित हुआ है, वहां गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना गोपनीय मानी गई है जिसका प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया गया है। जहां संभव हुआ है, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदाता पक्षकारों को निर्देश दिया गया था कि वे गोपनीय आधार पर दायर सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराएं।
- xviii. उपर्युक्त नियमावली के नियम 16 के अनुसार प्राधिकारी द्वारा आवश्यक तथ्यों का प्रकटन 8 मार्च, 2013 को जारी प्रकटन विवरण के तहत सभी हितबद्ध पक्षकारों को किया गया था और उन पर प्राप्त टिप्पणियों पर प्राधिकारी ने संभव समझी गई सीमा तक इस जांच परिणाम में विचार किया है।
- xix. वर्तमान जांच के दौरान जहां किसी हितबद्ध पक्षकार ने आवश्यक सूचना जुटाने से मना किया है अथवा उसे अन्यथा उपलब्ध नहीं कराया है अथवा जांच में अत्यधिक बाधा डाली है, वहां प्राधिकारी ने ऐसे पक्षकारों को असहयोगी माना है और उपलब्ध तथ्यों के आधार पर प्रकटन विवरण दर्ज किया है।

xx. *** यह चिन्ह किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है ।

xxi. प्राधिकारी द्वारा सीमाशुल्क अधिसूचना के अनुसार इस जांच परिणाम में जांच अवधि के दौरान प्रचलित 1 एमडा0 = 46.84 भारतीय रुपए की विनिमय दर अपनाई गई है ।

ग. विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र और समान वस्तु

घरेलू उद्योग के अनुरोध

7. विचाराधीन उत्पाद "पेरोक्सो सल्फेट्स" है जिसे आम तौर पर "परसल्फेट्स" के नाम से जाना जाता है । परसल्फेट्स घनिष्ठ रूप से संबंधित यौगिकों का एक समूह होते हैं । इनका उत्पादन अल्कली धातु लवणों के रूप में किया जाता है जिनमें अमोनियम परसल्फेट्स (एपीएस), पोटेशियम परसल्फेट्स, (पीपीएस) और सोडियम परसल्फेट्स (एस पी एस) शामिल हैं । वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच है । मूल जांच और वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच में शामिल उत्पाद वही रहता है जैसा कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पूर्ववर्ती जांचों में माना है । परसल्फेटों के तीनों प्रकारों का वस्त्र एवं रसायन उद्योगों में इनीसिएटर तथा ऑक्सीडाइजिंग एजेंट के रूप में समान अंतिम प्रयोग होते हैं और एक के स्थान पर दूसरे का प्रयोग किया जा सकता है । सभी तीनों लवण एक और समान उत्पाद हैं । परसल्फेट्स एक कार्बनिक यौगिक है और यह सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 28 के उपशीर्ष 283340 00 के अंतर्गत वर्गीकृत है ।
8. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देशों से आयातित विचाराधीन उत्पाद में कोई अंतर नहीं है । घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देशों से आयातित विचाराधीन उत्पाद भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं, विश्व भर के अधिकांश उत्पादकों द्वारा अपनाई जा रही विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, कार्य एवं उपयोग, उत्पाद विनिर्देशन, कीमत निर्धारण, वितरण एवं विपणन तथा वस्तु के टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं के संबंध में तुलनीय है । दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं । उपभोक्ताओं ने दोनों का अदल-बदल कर प्रयोग किया है । याचिकाकर्ताओं द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद संबद्ध देशों से आयातित वस्तु के समान वस्तु है ।
9. वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच है । निर्दिष्ट प्राधिकारी ने मूल जांच में विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के मुद्दे की जांच की है जिस पर भरोसा किया जाता है । घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देश से आयातित वस्तु नियमों के अनुसार समान वस्तुएं हैं ।

10. जहां तक विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र और समान वस्तु का संबंध है, मूल जांच में प्राधिकारी ने निम्नानुसार माना है:

“4. इस जांच में विचाराधीन उत्पाद पेरॉक्सीसल्फेट्स है (जिसे परसल्फेट्स भी कहा जाता है) । वर्तमान जांच में परसल्फेट्स के तीनों प्रकार शामिल किए गए हैं, जो हैं:

I) अमोनियम सल्फेट (एपीएस), (एन एच 4), 2एस2 ओ 8)

II) पोटेशियम पर सल्फेट (पी पी एस), (के2एस2 ओ 8); और

III) सोडियम पर सल्फेट (एस पी एस), (एन ए 2एस2 ओ 8) .

5. ये परसल्फेट्स घनिष्ठ रूप से संबंधित यौगिकों का एक समूह होते हैं जिनका उत्पादन अल्कली धातु लवणों के रूप में किया जाता है । ये अत्यधिक संवेदनशील तथा कारगर ऑक्सीडाइजिंग एजेंट होते हैं और ये क्रियाशील ऑक्सीजन का उत्सृजन अत्यंत कुशलतापूर्वक एवं आसानी से करते हैं । सभी तीनों सल्फेटों का विनिर्माण इलेक्ट्रोमेकेनिक ढंग से किया जाता है और इनके वस्त्र एवं रसायन उद्योगों में इनीसिएटर तथा ऑक्सीडाइजिंग एजेंट के रूप में समान या प्रतिस्थापनीय अंतिम प्रयोग होते हैं । समस्त परसल्फेट्स सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय-28 के उपशीर्ष 283340 और भारतीय व्यापार वर्गीकरण (सुमेलित वस्तु वर्णन एवं कोडिंग प्रणाली पर आधारित) के अंतर्गत उपशीर्ष 28334000 के अंतर्गत वर्गीकृत हैं । तथापि, उपर्युक्त वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और इस जांच के दायरे पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं है । .

6. घरेलू उद्योग के इन तर्कों के आधार पर कि परसल्फेट्स के उपर्युक्त प्रकारों को विचाराधीन उत्पाद के दायरे में शामिल किया जाना चाहिए क्योंकि परसल्फेट्स की विनिर्माण प्रक्रिया, कार्य एवं उपयोग समान हैं और उत्पादों में पर्याप्त तकनीकी तथा वाणिज्यिक प्रतिस्थापनीयता है, प्राधिकारी ने अपने प्रारंभिक जांच परिणामों में यह माना कि परसल्फेट्स के तीनों प्रकारों को इस मामले में “विचाराधीन उत्पाद” को परिभाषित करने के लिए समान और एक उत्पाद मानना अपेक्षित है । विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र या समान वस्तु के बारे में किसी हितबद्ध पक्षकार से कोई तर्क प्राप्त नहीं हुआ है । अतः प्राधिकारी विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के बारे में अपने प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं ।”

11. वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच है और प्राधिकारी द्वारा पूर्व में संस्तुत पाटनरोधी शुल्क संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों पर लागू है । इसलिए प्राधिकारी यह मानते हैं कि वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र वही रहता है जैसा कि मूल जांच में है । इसके अलावा, किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र में संशोधन करने का अनुरोध करते हुए अथवा संबद्ध देशों से आयातित और

घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित एवं आपूर्त संबद्ध वस्तु की समानता का विरोध करते हुए कोई संगत अनुरोध नहीं किया है ।

घ. घरेलू उद्योग का आधार और क्षेत्र

घरेलू उद्योग के अनुरोध

12. घरेलू उद्योग के आधार और क्षेत्र के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध निम्नानुसार हैं:

- i. निर्णायक समीक्षा में घरेलू उद्योग का क्षेत्र और आधार प्रासंगिक नहीं है ।
- ii. इसके अलावा, वर्तमान जांच में आवेदक मै0 गुजरात परसाल्ट्स प्रा0 लि0, मै0 कैलीबर कैमिकल्स प्रा0 लि0, मै0 वी आर परसल्टेड्स प्रा0 लि0 तथा मै0 योयो कैमिकल्स प्रा0 लि0 भारत में संबद्ध वस्तु के एकमात्र उत्पादक हैं और उनका कुल मिलाकर हिस्सा भारतीय उत्पादन में 100 प्रतिशत बनता है और इसीलिए ये नियमों के अंतर्गत घरेलू उद्योग हैं । इसके अलावा, घरेलू उद्योग के किसी भी संघटक ने संबद्ध उत्पाद का आयात नहीं किया है । अतः नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर संभावित अपात्रता का प्रश्न नहीं उठता है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

13. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत विचारों के प्रतिकूल किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार से कोई अनुरोध प्राप्त नहीं हुआ है । उपर्युक्त स्थिति को देखते हुए और नियमों तथा रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह मानते हैं कि वर्तमान जांच में आवेदक मै0 गुजरात परसाल्ट्स प्रा0 लि0, मै0 कैलीबर कैमिकल्स प्रा0 लि0, मै0 वी आर परसल्टेड्स प्रा0 लि0 तथा मै0 योयो कैमिकल्स प्रा0 लि0 नियमों के अर्थ के भीतर वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग हैं ।

ड. न्यूनतम सीमा

14. वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) और चीन जन.गण. से अन्य गौण स्रोतों से प्राधिकारी को प्राप्त आयात आंकड़ों के अनुसार संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु का आयात काफी अधिक और न्यूनतम सीमा से ज्यादा है । तथापि, जापान के मामले में जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु का कोई आयात सूचित नहीं किया गया है ।

च. पाटन मार्जिन, सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत का निर्धारण

चीन जन. गण. में सामान्य मूल्य का निर्धारण

बाजार अर्थव्यवस्था के दावे की जांच

15. जांच की शुरुआत के चरण पर प्राधिकारी ने चीन जन.गण. को गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश मानते हुए अनुमान पर कार्रवाई की थी । जांच की शुरुआत के बाद प्राधिकारी ने चीन के उत्पादकों/निर्यातकों को यह सलाह दी कि वे जांच शुरुआत संबंधी सूचना का उत्तर दें और उनके बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे के निर्धारण के लिए संगत सूचना प्रदान करें । प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8(3) में निर्धारित मानदंडों के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का खंडन करने के लिए समस्त ज्ञात निर्यातकों को एम ई टी प्रश्नावली की प्रतियां भेजीं । प्राधिकारी ने भारत स्थित दूतावास के जरिए चीन सरकार से यह भी अनुरोध किया कि वह अपने देश के उत्पादकों/निर्यातकों को संगत सूचना प्रदान करने की सलाह दें ।

16. यथा संशोधित पाटनरोधी नियमावली के पैरा-8, अनुबंध-1 के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का उस स्थिति में खंडन किया जा सकता है यदि चीन का निर्यातक पैरा 8 के उप पैरा (3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर सूचना और पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करता है और इसके प्रतिकूल सिद्ध करता है । चीन0 जन0 गण0 से संबद्ध वस्तु के सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार संबंधी प्रश्नावली के उत्तर में पैरा 8 के उप पैरा (3) में किए गए उल्लेख के अनुसार आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करना अपेक्षित है ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित मानदंडों पर विचार कर सकें कि क्या :-

- i. कच्ची सामग्रियों सहित कीमत; लागत और निविष्टि तथा श्रम लागत, उत्पादन, बिक्रियां और निवेश के बारे में चीन.जन.गण. में संबंधित फर्मों का निर्णय ऐसे बाजारी संकेतों के अनुसार किया जाता है जिसमें आपूर्ति और मांग परिलक्षित होती है और इस बारे में राज्य का अधिक हस्तक्षेप नहीं होता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत में बाजार मूल्य पर्याप्त रूप से प्रदर्शित होते हैं;
- ii. इस प्रकार की फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति विशेषकर परिसंपत्तियों के मूल्यहास, अन्य बट्टे खातों, वस्तु विनिमय-व्यापार और ऋणों की प्रतिपूर्ति के माध्यम से भुगतान के संदर्भ में पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाली प्रणाली से हुई महत्वपूर्ण विकृतियों के अध्यधीन हैं;
- iii. इस प्रकार की फर्में दिवालियापन और संपत्ति कानूनों के अध्यधीन हैं जो फर्मों के प्रचालन की कानूनी निश्चितता और स्थिरता की गारंटी देते हैं; और
- iv. विनिमय दर का परिवर्तन ब्याज की दर पर किया जाता है ।

घरेलू उद्योग के अनुरोध

17. इस संबंध में घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- (i) चीन एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश होने के कारण निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण करना अपेक्षित है। इन नियमों के अनुसार चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण निम्नलिखित में से किसी एक आधार पर किया जा सकता है:
 - i. किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत,
 - ii. किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में सामान्य मूल्य,
 - iii. भारत सहित अन्य देश के लिए ऐसे किसी तीसरे देश से कीमत,
 - iv. उचित लाभ मार्जिन शामिल करने के लिए समायोजित भारत में वास्तविक रूप से भुगतान की गई कीमत,
 - v. उचित लाभ मार्जिन शामिल करने के लिए समायोजित भारत में वास्तविक रूप से संदेय कीमत.
- (ii) याचिकाकर्ता (क) सूचना उपलब्ध न होने;(ख) इस प्रकार से अंगीकार की गई कीमत व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में कीमत होनी चाहिए; (ग) ऐसी सूचना के लिए ऐसे तीसरे देश में किसी उत्पादक से सहयोग भी अपेक्षित होगा, कारणों से अन्य देशों के लिए ऐसे तीसरे देशों से कीमत पर विचार नहीं कर सकी। याचिकाकर्ताओं का प्रस्ताव है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के रूप में यूरोप या अमरीका पर विचार करें।
- (iii) चीन के उत्पादकों के लिए भारत एक उचित प्रतिनिधिक देश है। भारत पर एक प्रतिनिधिक देश के रूप में विचार किए जाने के परिणामस्वरूप न केवल सही और पर्याप्त सूचना प्राप्त होगी, अपितु इस बात पर विचार करने का कोई तथ्यात्मक आधार भी नहीं है कि भारत एक उचित प्रतिनिधिक देश नहीं होगा। अन्य जांच प्राधिकारियों द्वारा भी भारत को एक उचित प्रतिनिधिक देश माना गया है।
- (iv) चूंकि चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण उपर्युक्त आधारों में से किसी एक के आधार पर किया जा सकता है, इसलिए चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण (क) भारत में कीमत, और (ख) विक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय तथा लाभ सहित विधिवत समायोजित भारत में उत्पादन लागत के आधार पर किया जा सकता है।
- (v) अतः याचिकाकर्ताओं ने घरेलू उद्योग के लिए उपलब्ध सूचना के अनुसार संबंधित देश के लिए ग्रेडवार आधार पर परिकलित सामान्य मूल्य का दावा किया है।
- (vi) चीन एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है। तथापि, वर्तमान मामले में चीन के किसी भी उत्पादक ने एम ई टी का दावा नहीं किया है। इस बात को ध्यान में रखते हुए सामान्य मूल्य का निर्धारण

नियमावली के अनुबंध—। के पैरा 7 के आधार पर करना अपेक्षित है । सामान्य मूल्य का निर्धारण किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत या परिकलित मूल्य के आधार पर इस वजह से नहीं किया जा सकता क्योंकि संगत सूचना सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है । अतः चीन में सामान्य मूल्य का परिकलन विधिवत समायोजित भारत में उत्पादन लागत के आधार पर करने की जरूरत है ।

- (vii) जापान के घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की कीमत की सूचना/साक्ष्य प्राप्त करने के प्रयास किए गए थे । जापान में संबद्ध वस्तु के उत्पादकों की कीमत सूचियां या भाव दरें प्राप्त करने के भी प्रयास किए गए थे । तथापि, याचिकाकर्ता जापान के घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की कीमत की कोई सूचना/साक्ष्य प्राप्त करने में समर्थ नहीं हुए हैं ।
- (viii) विभिन्न तीसरे देशों को चीन से हुए निर्यातों में भारी वृद्धि हुई है । तीसरे देशों को निर्यात में यह वृद्धि यूरोपीय संघ और अमरीका द्वारा लगाए गए पाटनरोधी शुल्क के बावजूद हुई है ।
- (ix) चीन के निर्यातकों और उत्पादकों ने भारतीय बाजार में परसलफेट्स का पाटन जारी रखा है । चीन से आयात अभी भी पाटित कीमतों पर हो रहे हैं और पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन के न केवल जारी रहने अपितु उसमें वृद्धि होने की संभावना है ।
- (x) चीन के उत्पादकों द्वारा तीसरे देशों को अत्यधिक पाटित कीमतों पर उत्पाद का निर्यात किया जा रहा है जैसा कि निम्नलिखित तालिका में दिए गए आंकड़ों से स्पष्ट होता है :

कीमत अम.डॉ. /मी.ट.	2008- 09	2009- 10	2010- 11	जन-दिस. 11	2011- 12	2012-13 (अप्रैल-दिस.)
भारत	1,134	950	880	1,045	1,073	1,048
शेष विश्व	1,212	1,049	1,109	1,106	1,089	1,045
कुल	1,211	1,048	1,107	1,106	1,089	1,045

- (xi) हालांकि उत्पाद की कीमत में वैश्विक रूप से वृद्धि हुई है, तथापि, इस अवधि के दौरान भारत और शेष विश्व के लिए चीन से निर्यात कीमत में भारी गिरावट आई है । यह निम्नलिखित सूचना से स्पष्ट होता है:

कीमत अम.डॉ./ मी.ट.	2008- 09	2009- 10	2010- 11	जन-दिस. 11	2011- 12	2012-13 (अप्रैल-दिस.)
चीन से विश्व के लिए	1,134	950	880	1,045	1,073	1,048
जापान से विश्व के लिए	1,233	1,391	1,355	1,474	1,476	1,362

अंतर	99	441	475	429	403	314
------	----	-----	-----	-----	-----	-----

- (xii) क्षति अवधि के दौरान जापान से भारत को निर्यात केवल 2008-09 में भारी मात्रा में हुए हैं जो स्पष्ट तौर पर पाटित कीमतें थीं। तथापि, निर्यात की मात्रा में उसके बाद भारी गिरावट आई है और जांच अवधि में विचाराधीन उत्पाद का कोई ज्ञात आयात नहीं हुआ है जबकि वर्ष 2009-10 और 2010-11 में आयात की मात्रा काफी कम थी जिससे पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में संभावित कीमत का सही निर्धारण हो सकता है। वर्ष 2009-10 और 2010-11 के दौरान जापान से भारत को हुए निर्यातों की मात्रा अत्यंत कम होने के कारण यह स्पष्ट तौर पर माना जा सकता है कि ये सौदे देश में उत्पाद की खपत के बारे में वाणिज्यिक सौदों का द्योतक नहीं हैं।
- (xiii) हालांकि वर्ष 2008-09 के दौरान जापान से भारत को निर्यात अत्यधिक पाटित कीमतों पर हुए थे और यद्यपि, इससे वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन और परिणामी क्षति की संभावना की स्पष्ट पुष्टि होती है। तथापि, जिस कीमत पर वस्तु का जापान से शेष विश्व को निर्यात किया जा रहा है उससे यह सिद्ध होता है कि विचाराधीन उत्पाद के लिए जापान से शेष विश्व हेतु निर्यात कीमत सामान्य मूल्य से कम हैं और इससे वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में क्षति की संभावना की स्पष्ट पुष्टि होती है। जहां जापान से तीसरे देश के लिए निर्यात कीमत स्पष्ट तौर पर पाटित कीमत है वहीं इन कीमतों पर भारत की संभावित कीमत के रूप में विचार किए जाने से यह पता चलेगा कि इन निर्यातों से घरेलू उद्योग को भारी क्षति होगी। इसके अलावा, जापान से शेष विश्व को हुए निर्यात की मात्रा काफी अधिक है।
- (xiv) चीन परसल्फेट्स का एक बड़ा निर्यातक है। चीन विश्व को लगभग 45,000 मी.ट. का निर्यात करता है। अमरीका द्वारा वर्ष 2011 में की गई प्रशासनिक समीक्षा से चीन द्वारा पाटन की पुष्टि हुई है और उसने 119.02 प्रतिशत की दर से शुल्क लगाया है।
- (xv) इसके अलावा, ई यू ने अप्रैल, 2002 में चीन से परसल्फेट्स पर अपने 1995 के पाटनरोधी शुल्क के आदेश को रद्द करने के बाद अक्टूबर, 2007 में यह शुल्क पुनः लागू किया है। चीन पर लागू होने वाली वर्तमान पाटनरोधी शुल्क की दरें काफी उच्च 72 प्रतिशत हैं। इसके अलावा, ई यू ने 10 अक्टूबर 2012 को चीन पर लागू पाटनरोधी शुल्क के बारे में निर्णायक समीक्षा जांच शुरू की है।
- (xvi) मूल जांच के समय निर्धारित पाटन मार्जिन अत्यधिक था। वर्तमान अवधि में पाटन मार्जिन काफी अधिक बना हुआ है। तीसरे देशों को हुए निर्यातों के संबंध में पाटन मार्जिन भी काफी अधिक है। अतः यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि पाटन मार्जिन न केवल न्यूनतम सीमा से अधिक है अपितु अत्यधिक भी है। यदि वर्तमान शुल्क समाप्त कर दिया जाएगा तो पाटन में निश्चित रूप से तेजी आएगी।

प्राधिकारी द्वारा जांच

18. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमावली के नियम 6.8 में यह उपबंध है कि जहां कोई हितबद्ध पक्षकार उचित समय के भीतर आवश्यक सूचना जुटाने से मना करता है अथवा उसे अन्यथा उपलब्ध नहीं कराता है अथवा जांच में अत्यधिक बाधा डालता है, वहां प्राधिकारी उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अपने जांच परिणाम दर्ज कर सकते हैं।
19. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों और चीन सरकार को निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से सूचना प्रस्तुत करने की जरूरत के बारे में पर्याप्त ढंग से सूचित किया गया है और इस बारे में अनुरोध करने के लिए उन्हें पर्याप्त अवसर भी प्रदान किया गया है। चीन जन.गण. के किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने प्राधिकारी के साथ सहयोग नहीं किया है और वर्तमान जांच का उत्तर नहीं दिया है। इसके अलावा, किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने नियमों में दी गई परिभाषा के अनुसार ऐसा कोई वैकल्पिक आधार उपलब्ध नहीं कराया है जिस पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया जा सके। उपर्युक्त स्थिति के मद्देनजर और चीन को गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश मानते हुए प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है। नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 में निहित अन्य तरीकों के बारे में रिकॉर्ड में उपलब्ध पर्याप्त सूचना के अभाव में प्राधिकारी ने "अन्य उचित आधार" का तरीका अपनाकर सामान्य मूल्य निर्धारित किया है।"
20. तदनुसार, प्राधिकारी ने बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय तथा लाभ सहित विधिवत समायोजित भारत में उत्पादन लागत के आधार पर चीन के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन किया है। तदनुसार, प्राधिकारी ने अमोनियम परसल्फेट (ए पी एस), सोडियम परसल्फेट (एस पी एस) और पोटेशियम परसल्फेट (पी पी एस) के संबंध में चीन जन.गण. के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन किया। प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान चीन से केवल अमोनियम परसल्फेट (ए पी एस) और, सोडियम परसल्फेट (एस पी एस) का आयात किया गया है। अमोनियम परसल्फेट (ए पी एस), सोडियम परसल्फेट (एस पी एस) और पोटेशियम परसल्फेट (पी पी एस) के लिए इस प्रकार संगणित सामान्य मूल्य निम्नानुसार है :-

सामान्य मूल्य-चीन	ए पी एस	एस पी एस	पी पी एस	भारत औसत
अम.डॉ./किग्रा.	***	***	-	***

छ. निर्यात कीमत-चीन जन.गण.

21. जहां तक चीन जन.गण. में निर्यात कीमत का संबंध है, प्राधिकारी ने यह पाया है कि संबद्ध देश के किसी भी निर्यातक ने सहयोग नहीं किया है। अतः प्राधिकारी ने निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु डी जी सी आई

ए ए एस द्वारा प्रदत्त सौदेवार आयात आंकड़ों के अनुसार भारत औसत सी आई एफ कीमत पर विचार किया है। परसल्फेट्स के शामिल तीनों प्रकारों के लिए पृथक निर्यात कीमत निर्धारित की गई है। उक्त देश से किसी सहयोगी निर्यातक से पूर्ण सूचना के अभाव में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निवल कारखाना निर्यात कीमत का निर्धारण डी जी सी आई एंड एस द्वारा सूचित सी आई एफ मूल्य में से अंतरदेशीय परिवहन, समुद्री भाड़े और बीमा आदि के लिए समायोजनों की अनुमति देने के बाद किया गया है। तदनुसार, कारखाना स्तर पर निवल निर्यात कीमत का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है:

उत्पाद प्रकार	निवल निर्यात कीमत अम.डा. /किग्रा.
अमोनियम परसल्फेट	0.82
पोटेशियम परसल्फेट	जांच के दौरान कोई आयात नहीं
सोडियम परसल्फेट	1.31
भारत औसत	0.90

ज. पाटन मार्जिन—चीन जन.गण.

22. उत्पाद प्रकार स्तर पर पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए संबद्ध वस्तु के अलग-अलग प्रकारों की कारखाना सामान्य मूल्य की तुलना संबंधित कारखाना निर्यात कीमतों के साथ की गई है और उसके बाद विचाराधीन उत्पाद के लिए भारत औसत पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है :

उत्पाद प्रकार	आयात मात्रा किग्रा.	सामान्य मूल्य अम.डा. / किग्रा.	निर्यात कीमत अम.डा. / किग्रा.	पाटन मार्जिन अम.डा. / किग्रा.	पाटन मार्जिन %
अमोनियम परसल्फेट	370419	***	0.82	***	***
पोटेशियम परसल्फेट	-	-	-	-	-
सोडियम परसल्फेट	71500	***	1.31	***	***
जांच अवधि के दौरान कुल आयात मात्रा किग्रा. में	441919				
भारत औसत		***	0.90	***	***

पाटन मार्जिन रेंज	-	-	-	-	45-55
-------------------	---	---	---	---	-------

23. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जन.गण से पाटन मार्जिन न केवल न्यूनतम सीमा से अधिक है अपितु काफी ज्यादा है ।

झ. जापान में सामान्य मूल्य का निर्धारण

घरेलू उद्योग के अनुरोध

24. घरेलू उद्योग ने अनुरोध किया है कि जापान के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन नियमानुसार किया जाए क्योंकि जापान के घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की कीमत की सूचना/साक्ष्य उपलब्ध नहीं है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

25. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जापान के किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने निर्धारित प्रश्नावली के अनुसार सामान्य मूल्य के बारे में कोई उत्तर या सूचना उपलब्ध नहीं कराई है । प्राधिकारी आगे यह नोट करते हैं कि जापान के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों तथा जापान सरकार को निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से सूचना प्रस्तुत करने की जरूरत के बारे में पर्याप्त रूप से सूचित किया गया है और इस बारे में अनुरोध करने के लिए उन्हें पर्याप्त अवसर भी दिया गया था । डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों के अनुसार जांच अवधि में जापान से कोई आयात नहीं हुआ है । इन परिस्थितियों में प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार जापान के सभी निर्यातकों के लिए संबद्ध वस्तु के कारखाना सामान्य मूल्य का निर्धारण उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निम्नानुसार किया है:

	अम.डा./किग्रा.
जापान के लिए सामान्य मूल्य	***

अ. निर्यात कीमत—जापान

26. जांच अवधि के दौरान जापान से भारत को संबद्ध वस्तु के "शून्य" निर्यात को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने वर्ल्ड ट्रेड एटलस में उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर जापान से विश्व भर के लिए संबद्ध वस्तु की औसत निर्यात कीमत पर भरोसा किया है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस बारे में भरोसा किए गए

आंकड़ों से संबद्ध वस्तु का टाइपवार पता नहीं चलता है । तदनुसार, प्राधिकारी का प्रस्ताव विधिवत समायोजनों के साथ जापान से भारत के लिए संबद्ध वस्तु की संभावित निवल निर्यात कीमत निम्नानुसार निर्धारित करने का है :

	अम.डा./किग्रा.
जपान की संभावित निवल निर्यात कीमत	1.32

ट. संभावित पाटन मार्जिन – जापान

27. विचाराधीन उत्पाद के लिए पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु भारत औसत सामान्य मूल्य और संबद्ध वस्तु की निवल निर्यात कीमत की तुलना निम्नानुसार की गई है:

विवरण	इकाई	
सामान्य मूल्य	अम.डा./किग्रा	***
निवल निर्यात कीमत	अम.डा./किग्रा	1.32
पाटन मार्जिन	अम.डा./किग्रा	***
पाटन मार्जिन	%	***
	रेंज	0-10

28. यद्यपि, जापान के संबंध में उपर्युक्तानुसार निर्धारित पाटन मार्जिन सकारात्मक है परंतु पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के लिए उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता । तथापि, जापान से संबद्ध वस्तु के तीसरे देश को हुए निर्यातों के आधार पर इस प्रकार निर्धारित पाटन को संभावना के विश्लेषण के एक संकेतक के रूप में स्वीकार किया जा सकता है ।

29. प्राधिकारी आगे यह नोट करते हैं कि जांचोत्तर अवधि के दौरान चीन जन.गण. के संबंध में पाटन मार्जिन और जापान के संबंध में संभावित पाटन मार्जिन भी सकारात्मक है जैसा कि निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है:

जांचोत्तर अवधि में संभावित पाटन मार्जिन

चीन.जन.गण.

विवरण	माप की इकाई	
सामान्य मूल्य	अम. डा./किग्रा.	***

निवल निर्यात कीमत	अम. डा./किग्रा.	0.95
पाटन मार्जिन	अम. डा./किग्रा.	***
पाटन मार्जिन	%	***
पाटन मार्जिन	रैंज	35-45

जापान

विवरण	माप की इकाई	
सामान्य मूल्य	अम. डा./किग्रा.	***
निवल निर्यात कीमत	अम. डा./किग्रा.	1.27
पाटन मार्जिन	अम. डा./किग्रा.	***
पाटन मार्जिन	%	***
पाटन मार्जिन	रैंज	5-15

उ. क्षति एवं कारणात्मक संबंध का निर्धारण

घरेलू उद्योग के अनुरोध

30. क्षति एवं कारणात्मक संबंध के बारे में घरेलू उद्योग ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं:

- (क) चीन से विचाराधीन उत्पाद का सतत पाटन हुआ है।
- (ख) वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद के पाटन में तेजी आने की संभावना है।
- (ग) लागू पाटनरोधी शुल्क के बावजूद चीन से आयातों में समग्र रूप में और भारत में उत्पादन तथा खपत की तुलना में वृद्धि हुई है।
- (घ) चीन जनगण. से आयातों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती हो रही है। पाटनरोधी शुल्क के बिना आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत से काफी कम है जिससे बाजार में घरेलू उद्योग की कीमत पर न्यूनकारी प्रभाव पड़ा है।
- (ङ) आयातों से घरेलू उद्योग की कीमत का ह्रास हो रहा है और कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है जो पाटन के अभाव में बढ़ गई होती।
- (च) क्षमता उपयोग, घरेलू बिक्री, बाजार हिस्से, लाभ, निवेश पर आय, नकद प्रवाह आदि के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में 2010-11 तक सुधार हुआ और उसके बाद जांच अवधि में गिरावट आई। यदि मौजूदा पाटनरोधी शुल्क समाप्त किया जाता है तो संबद्ध देशों से घरेलू उद्योग को क्षति की पुनरावृत्ति होने की प्रबल संभावना है।
- (छ) घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग और बाजार हिस्से में लगातार गिरावट आई है।

- (ज) घरेलू उद्योग को अभी भी पाटित संबद्ध वस्तु के आयातों से क्षति हो रही है, पाटनरोधी शुल्क की समाप्ति का तात्पर्य घरेलू उद्योग को हुई क्षति की गंभीरता से होगा ।
- (झ) जिन विभिन्न देशों पर पाटनरोधी शुल्क लागू है, उनसे भारत को और अन्यथा परसल्फेट के आयातों में अत्यधिक वृद्धि हुई है । परिणामतः घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में भारी गिरावट आई है और आयातों के हिस्से में अत्यधिक वृद्धि हुई है । इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में भी भारी गिरावट आई है ।
- (ञ) समूची क्षति अवधि के दौरान मांग में लगातार वृद्धि हुई है ।
- (ट) घरेलू उद्योग की बिक्री में मांग में हुई वृद्धि के अनुपात में बढ़ोत्तरी नहीं हो सकी । वस्तुतः पूर्ववर्ती दो वर्षों की तुलना में जांच अवधि में बिक्री में गिरावट आई है ।
- (ठ) पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद आयातों में गिरावट आई परंतु जांच अवधि के दौरान उनमें पुनः भारी वृद्धि हुई । तथापि, जापान से आयातों में अत्यधिक गिरावट आई और जांच अवधि में उनका ~~क्षेत्र~~ शून्य हो गया । इस संबंध में यह उल्लेख करना प्रासंगिक है कि अमरीका और ई यू द्वारा चीन से संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लागू है । यदि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किया जाता है तो संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा में निश्चित तौर पर वृद्धि होगी ।
- (ड) जापान से कोई आयात नहीं हुआ है जिसकी वजह लागू वर्तमान पाटनरोधी शुल्क को माना जाना चाहिए । तथापि, तीसरे देशों को जापान के संबद्ध वस्तु के निर्यात अत्यधिक हैं ।
- (ढ) वर्ष 2009-10 तक चीन से पाटित आयातों के बाजार हिस्से में गिरावट आई । तथापि, जांच अवधि में इसमें पुनः वृद्धि हुई । इसके अलावा, नए स्रोतों से पाटन की भौजदगी के कारण इस अवधि के दौरान पाटित आयातों का बाजार हिस्सा काफी अधिक बना हुआ है ।
- (ण) घरेलू उद्योग को पाटित आयातों से अभी भी क्षति हो रही है । पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के कारण घरेलू उत्पादकों के बाजार हिस्से में अत्यधिक बढ़ोत्तरी होनी चाहिए थी क्योंकि घरेलू उद्योग को उसके द्वारा पूर्व में गंवाए गए बाजार हिस्से को पुनः हासिल कर लेना चाहिए था । तथापि, घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में आगे और गिरावट आई है ।
- (त) आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और उत्पादन लागत से भी काफी कम है ।
- (थ) यदि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किया जाता है तो आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम होगी । अतः पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से कीमत में अत्यधिक ह्रास होगा और परिणामतः कम कीमत पर बिक्री होगी ।
- (द) पाटित आयातों में समग्र रूप में और भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में भारी वृद्धि हुई है । इसके अलावा, भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है और आयातों के प्रभाव के उरा वृद्धि में रूकावट आई है जो अन्यथा काफी हद तक बढ़ गई होती ।
- (ध) संबद्ध वस्तु की मांग में वृद्धि, घरेलू उद्योग द्वारा क्षमता वृद्धि और पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बावजूद घरेलू उद्योग की बिक्री और उत्पादन में मांग में हुई वृद्धि के अनुपात में और उस सीमा तक बढ़ोत्तरी नहीं हुई । वस्तुतः पूर्ववर्ती दो वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान बिक्री और उत्पादन में होने वाली वृद्धि में गिरावट आई है । परिणामतः घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में लगातार गिरावट आई है ।

- (न) परसलफेट्स की मांग में वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमता में भी वृद्धि की ताकि वह बढ़ती हुई मांग को पूरा कर सके । तथापि, क्षमता उपयोग में गिरावट आई । क्षमता उपयोग में यह गिरावट देश में मांग में वृद्धि के बावजूद आई है ।
- (प) हालांकि घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री में 2010-11 तक वृद्धि हुई । तथापि, उसके बाद उसमें गिरावट आई । इसके अलावा, घरेलू उद्योग की बिक्री में वृद्धि दर हर हालत में मांग में वृद्धि दर से काफी कम रही है । अतः क्षमताओं की मौजूदगी, घरेलू उद्योग द्वारा क्षमताओं में आगे और वृद्धि तथा पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बावजूद घरेलू उद्योग अपनी घरेलू बिक्री और बाजार हिस्से को बढ़ाने में समर्थ नहीं रहा है ।
- (फ) पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के कारण घरेलू उत्पादकों के बाजार हिस्से में भारी वृद्धि होनी चाहिए थी क्योंकि घरेलू उद्योग ने पाटित आयातों के कारण पूर्व में गंवाए गए बाजार हिस्से को वापस हासिल कर लिनया होता । तथापि, घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में आगे और गिरावट आई । भारतीय उत्पादकों का बाजार हिस्सा जो मूल जांच के आधार वर्ष में 79.5 प्रतिशत था, वह निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जांचित मूल मामले की जांच अवधि में घटकर 68.8 प्रतिशत हो गया । जांच अवधि में यह आगे और घटकर 57.34 प्रतिशत हो गया । यद्यपि, इसमें पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद सुधार हुआ है ।
- (ब) जांच अवधि में घरेलू उद्योग के लाभ में भारी गिरावट प्रदर्शित हुई है । बिक्री कीमत में हुई वृद्धि लागत में वृद्धि के अनुपात में नहीं है । यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग लागत में हुई वृद्धि के अनुपात में कीमत में वृद्धि नहीं कर सका । वस्तुतः बिक्री कीमत घट रही है, परिणामतः घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में भारी गिरावट प्रदर्शित हुई है ।
- (भ) घरेलू उद्योग की मालसूची में यद्यपि पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बाद गिरावट आई, तथापि, अभी भी यह काफी अधिक बनी हुई है ।
- (म) घरेलू उद्योग की उत्पादकता में गिरावट प्रदर्शित हुई है । उत्पादकता में यह गिरावट देश में उत्पाद के पाटन के कारण उत्पादन में आई गिरावट की वजह से आई है ।
- (य) क्षति अवधि में रोजगार और मजदूरी में सुधार प्रदर्शित हुआ है ।
- (र) उत्पादन, बिक्री, बाजार हिस्से, लाभ, निवेश पर आय, नकद लाभ आदि जैसे अधिकांश मापदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग की वृद्धि नकारात्मक है ।
- (ल) आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत का ह्रास हो रहा है और कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आ रही है जिसमें पाटन के अभाव में वृद्धि हो गई होती ।
- (व) क्षमता उपयोग, घरेलू बिक्री, बाजार हिस्से, लाभ, निवेश पर आय, नकद प्रवाह आदि के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है ।
- (श) कीमत कटौती अत्यधिक सकारात्मक है ।
- (ष) यद्यपि, घरेलू उद्योग अपने उत्पादन और बिक्री मात्रा में कुछ हद तक सुधार करने में समर्थ था, तथापि, यह वृद्धि क्षमता वृद्धि की अनुपात में नहीं थी । इसके अलावा, जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग ने उत्पादन और बिक्री गंवाई है ।
- (स) घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग और बाजार हिस्से में लगातार गिरावट आई है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

31. घरेलू उद्योग द्वारा इस संबंध में किए गए विभिन्न अनुरोधों पर विचार करते हुए और संबद्ध देशों के किसी भी उत्पादक/निर्यातक द्वारा कोई उत्तर/अनुरोध न किए जाने के मद्देनजर प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से आयातों के पाटन और क्षति की संभावना के पहलुओं की जांच करने से पूर्व घरेलू उद्योग को वर्तमान में हो रही क्षति, यदि कोई हो, की जांच करने की कार्यवाई की है ।
32. अनुबंध-11 के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम-11 में यह उपबन्ध है कि किसी क्षति जांच में "... पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर प्रभाव प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी समस्त कारकों को ध्यान में रखते हुए ..." ऐसे कारकों की जांच शामिल होगी जिनसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का पता चल सकता हो । कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय इस बात पर विचार करना आवश्यक है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में अत्यधिक कम हो जाती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या जोरों में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है, जो अन्यथा प्रयाप्त स्तर तक बढ़ गई होती । "
33. भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए उपर्युक्त नियमावली के अनुबंध-11 के अनुसार उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल मूल्य प्राप्ति और पाटन की मात्रा और मार्जिन जैसे उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतों पर विचार किया गया है ।
34. वर्तमान जांच लागू पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा है । नियम 23 में यह उपबन्ध है कि नियम 11 के उपबन्ध समीक्षा के मामले में भी आवश्यक परिवर्तनों सहित लागू होंगे । अतः प्राधिकारी ने अनुबंध-11 के साथ पठित नियम 11 के उपबन्धों पर आवश्यक परिवर्तनों के साथ विचार करते हुए घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण किया है । इसके अलावा, चूंकि विचाराधीन उत्पाद के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लागू है, अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति की जांच करने समय संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों पर मौजूदा पाटनरोधी शुल्क पर विचार करना अपेक्षित है । प्राधिकारी ने यह जांच की है कि क्या मौजूदा उपाय क्षति पहुंचाने वाले पाटन को समाप्त करने के लिए पर्याप्त प्रभाव नहीं ।
35. सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 9(क)(5) के अनुसार लगाया गया पाटनरोधी शुल्क जब तक उसे समाप्त न किया जाए, इस प्रकार से लगाए जाने की तारीख से 5 वर्ष की समाप्ति पर निष्प्रभावी हो जाएगा । परंतु यदि किसी समीक्षा में केन्द्र सरकार का यह मत हो कि ऐसे शुल्क की समाप्ति से पाटन तथा क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है तो वह इस प्रकार से लगाए गए शुल्क की अवधि

को समय-समय पर आगे और 5 वर्ष के लिए बढ़ा सकती है और आगे की ऐसी अवधि इस प्रकार के समय विस्तार के आदेश की तारीख से शुरू होगी।

36. वर्तमान क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के घरेलू उद्योग पर मात्रा और कीमत प्रभाव तथा कीमत और लाभप्रदता पर उसके प्रभाव की जांच की है ताकि क्षति की मौजूदगी और पाटन तथा क्षति, यदि कोई हो, के बीच कारणात्मक संबंध की जांच की जा सके। तदनुसार, पाटित आयातों के मात्रा और कीमत प्रभाव की निम्नानुसार जांच की गई है।

मात्रात्मक प्रभाव:

37. पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव की निम्नानुसार जांच की गई है :

मांग और बाजार हिस्सा

38. प्राधिकारी ने देश में उत्पाद की मांग और प्रत्यक्ष खपत का निर्धारण भारतीय उत्पादकों की घरेलू बिक्री और सभी स्रोतों से हुए आयातों की मात्रा के रूप में किया है। इस प्रकार निर्धारित मांग को निम्नलिखित तालिका में देखा जा सकता है :

मांग	यू ओ एम	2008-09	2009-10	2010-11	जांच अवधि
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी. ट.	2,066	2,524	2,655	2,420
चीन जन.गण.	मी. ट.	204	266	246	442
जापान	मी. ट.	68	2	-	-
संबद्ध देश- आयात	मी. ट.	272	268	246	442
अन्य आयातक	मी. ट.	242	771	1,011	1,309
कुल मांग/खपत	मी. ट.	2,580	3,562	3,912	4,171
मांग में बाजार हिस्सा					
➤ घरेलू उद्योग	%	80.09	70.85	67.88	58.01

✓ चीन जन.गण.	%	7.89	7.46	6.28	10.60
✓ जापान	%	2.64	0.06	-	-
✓ संबद्ध देश	%	10.52	7.52	6.28	10.60
✓ अन्य देश	%	9.39	21.63	25.84	31.39
✓ कुल	%	100	100	100	100

39. प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान देश में संबद्ध वस्तु की मांग में सकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है और उसमें पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान भारी वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग की बिक्री में मांग में वृद्धि के अनुरूप और पाटित आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लागू होने के कारण वर्ष 2010-11 तक सुधार प्रदर्शित हुआ है। तथापि, जांच अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री में गिरावट आई है। परिणामतः घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में भी भारी गिरावट आई है। अतः यह देखा जाता है कि चीन जन.गण. के बाजार हिस्से में 2010-11 तक गिरावट आई और उसके बाद जांच अवधि में भारी वृद्धि हुई। आगे यह नोट किया जाता है कि क्षति अवधि के दौरान अन्य देशों के बाजार हिस्से में भी भारी वृद्धि हुई है। प्राधिकारी द्वारा अमरीका, ताईवान और तुर्की से विचाराधीन उत्पाद के आयातों के बारे में जांच शुरू की जा चुकी है।

आयात मात्रा तथा बाजार हिस्सा

40. जहां तक पाटित आयातों की मात्रा का संबंध है, प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में भारी वृद्धि हुई है।

विवरण	इकाई	2008-09	2009-10	2010-11	जांच अवधि
चीन	मी.ट.	204	266	246	442
जापान	मी.ट.	68	2	-	-
संबद्ध देश	मी.ट.	272	268	246	442
अन्य देश	मी.ट.	242	771	1,011	1309
कुल आयात	मी.ट.	514	1,038	1,257	1,751
आयातों में बाजार हिस्सा					
चीन	%	39.61	25.60	19.56	25.24

➤ जापान	%	13.24	0.19	-	-
➤ संबद्ध देश	%	52.85	25.80	19.56	25.24
➤ अन्य देश	%	47.15	74.20	80.44	74.76
➤ कुल आयात	%	100	100	100	100
निम्नलिखित की तुलना में संबद्ध देशों से आयात					
➤ भारत में खपत/मांग	%	10.52	7.52	6.28	10.60
➤ भारत में उत्पादन	%	8.12	7.33	6.08	11.83

41. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पूर्ववर्ती वर्ष और आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में चीन जन.गण. से पाटित आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई है। तथापि, जापान से आयात पूर्णतः बंद हो गए हैं जैसा कि उपर्युक्त तालिका से देखा जा सकता है। संबद्ध देशों को कुल मिलाकर आयातों में 2010-11 तक उत्पादन तथा खपत की तुलना में गिरावट आई है और उसके बाद जांच अवधि में वृद्धि हुई है। क्षति अवधि के दौरान अन्य देशों से आयातों में वृद्धि हुई है।

उत्पादन, क्षमता और क्षमता उपयोग

42. नीचे दी गई तालिका के अनुसार प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के उत्पादन और क्षमता उपयोग में 2010-11 तक सुधार हुआ और उसके बाद जांच अवधि में गिरावट आई।

विवरण	इकाई	2008-09	2009-10	2010-11	जांच अवधि
स्थापित क्षमता	मी.ट.	5,200	5,600	6,400	6,400
उत्पादन	मी. ट.	3343	3653	4041	3737
क्षमता उपयोग	%	64	65	63	58

बिक्री

43. घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में 2010-11 तक सकारात्मक प्रवृत्ति और उसके बाद गिरावट प्रदर्शित होती है। यह नोट किया जाता है कि मांग में वृद्धि को पूरा करने की क्षमता होने के बावजूद घरेलू उद्योग की बिक्री में गिरावट आई है।

विवरण	इकाई	2008-09	2009-10	2010-11	जांच अवधि
घरेलू बिक्री	मी.ट.	2,066	2,524	2,655	2,420
सूचीबद्ध		100.00	122	128	117
कुल मांग	मी.ट.	2,580	3,562	3,912	4,171
सूचीबद्ध		100	138	152	162

बजार हिस्सा

44. चीन से हुए आयातों का जांच अवधि में भारतीय बाजार में पर्याप्त हिस्सा बना हुआ है। क्षति अवधि के दौरान घरेलू मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आई।

मांग में बाजार हिस्सा	आप की इकाई	2008-09	2009-10	2010-11	जांच अवधि
➤ घरेलू उद्योग	%	80.09	70.85	67.83	58.01
➤ चीन जन.गण.	%	7.89	7.46	6.28	10.60
➤ जापान	%	2.64	0.06		
➤ संबद्ध देश	%	10.52	7.52	6.23	10.60
➤ अन्य देश	%	9.39	21.63	25.84	31.39

घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

45. संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत पर प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री और कीमत ह्रास तथा कीमत न्यूनीकरण के संदर्भ में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत, निवल बिक्री प्राप्ति और क्षति रहित कीमत की तुलना संबद्ध देशों से आयातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है। जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के लिए तुलना पाटित आयातों के पहुंच मूल्य और घरेलू बाजार में घरेलू बिक्री कीमत के बीच की गई थी। घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति का निर्धारण करने में करों, रिबेट, घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित छूट और कमीशन का समायोजन किया गया है। कम कीमत पर बिक्री क्षति के निर्धारण का एक प्रमुख संकेतक है। इसलिए प्राधिकारी ने क्षति रहित कीमत की गणना की है और कम कीमत पर बिक्री की मात्रा निकालने के लिए इसकी तुलना पहुंच मूल्य के साथ की है। घरेलू उद्योग के लिए क्षति रहित कीमत का आकलन जांच

अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन लागत पर समुचित विचार करने के बाद किया गया है ।
स्थिति निम्नानुसार है:

कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री संबंधी प्रभाव

46. प्राधिकारी ने पाटनरोधी शुल्क सहित और रहित दोनों प्रकार से कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री का विश्लेषण किया है :

कीमत कटौती : चीन जन. गण.

विवरण	यू ओ एम	ए पी एस	एस पी एस	पी पी एस	भारित औसत
निवल बिक्री प्राप्ति	रू./किग्र.	***	***	-	***
पहुंच कीमत	रू./किग्र.	46.54	72.88	-	50.80
पाटनरोधी शुल्क रहित कीमत कटौती	रू./किग्र.	***	***	-	***
	%	***	***	-	***
	रेंज	25-35	15-25	-	35-45
पाटनरोधी शुल्क सहित कीमत कटौती	रू./किग्र.	(***)	(***)	-	***
	%	(***)	(***)	-	***
	रेंज	(15)- (25)	(10)- (20)	-	0-10

कम कीमत पर बिक्री

विवरण	यू ओ एम	ए पी एस	एस पी एस	पी पी एस	भारित औसत
क्षति रहित कीमत	रू./किग्र.	***	***	***	***
पहुंच कीमत	रू./किग्र.	46.54	72.88	-	50.80
पाटनरोधी शुल्क रहित कीमत कटौती	रू./किग्र.	***	***	-	***
	%	***	***	-	***
	रेंज	25-35	25-35	-	30-40

पाटनरोधी शुल्क सहित कीमत कटौती	रु./किग्रा.	(***)	(***)	-	(***)
	%	(***)	(***)	-	(***)
	रेंज	(15)-(25)	(0)-(10)	-	(0)-(10)

प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान जापान से संबद्ध वस्तु का कोई आयात नहीं हुआ है। प्राधिकारी जांच अवधि के दौरान चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु के आयातों के बारे में पाटनरोधी शुल्क सहित और रहित दोनों रूपों में कीमत कटौती सकारात्मक नोट करते हैं। जहां तक कम कीमत पर बिक्री के प्रभाव का संबंध है, यह पाटनरोधी शुल्क के बिना सकारात्मक है।

पाटित आयातों का कीमत हासकारी और न्यूनीकारी प्रभाव:

47. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या संबद्ध देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत में हास/न्यूनीकरण हो रहा था, प्राधिकारी ने पाटनरोधी शुल्क के बिना क्षति अवधि के दौरान उत्पादन लागत और घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत की तुलना आयातों की पहुंच कीमत के साथ की है जिसका उल्लेख निम्नलिखित तालिका में किया गया है :

विवरण	यू ओ एम	2008-09	2009-10	2010-11	जांच अवधि
उत्पादन की लागत	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	120	95	127
निवल बिक्री प्राप्ति	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	107	106	107
लाभ/हानि	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	59	144	30
पहुंच कीमत चीन जन.गण.	रु./किग्रा.	56.69	48.66	48.60	50.80
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	86	86	90
जापान से पहुंच कीमत	रु./किग्रा.	46.95	90.92	-	-
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	194	-	-

48. उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तत्काल पूर्ववर्ती और आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान उत्पादन लागत और निवल बिक्री कीमत, दोनों में वृद्धि हुई है। तथापि, बिक्री लागत में वृद्धि बिक्री कीमत से अधिक हुई है। इसी के साथ-साथ तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान आयातों की पहुंच कीमत में गिरावट आई है।

अन्य क्षति मापदंडों की जांच

49. पूर्ववर्ती खंड के विभिन्न खंडों में घरेलू उद्योग की मात्रा और कीमत पर पाटित आयातों के प्रभाव और आयातों की मात्रा एवं मूल्य, क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग तथा घरेलू उद्योग की बिक्री एवं बाजार हिस्से के साथ मांग की पद्धति जैसे क्षति के प्रमुख संकेतकों की जांच करने के बाद जिन अन्य आर्थिक मापदंडों से घरेलू उद्योग को हुई क्षति की मौजूदगी का पता चल सकता है उनका निम्नानुसार विश्लेषण किया गया है:

लाभ/हानि, निवेश पर आय तथा नकद प्रवाह

50. निवेश पर आय, ब्याज पूर्व एवं पश्चात लाभ/हानि, निवेश पर आय और नकद लाभ को निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है :

विवरण	इकाई	2008-09	2009-10	2010-11	जांच अवधि
उत्पादन की लागत	सूचीबद्ध	***	***	***	***
प्रवृत्ति	रु./किग्रा.	100	120	96	128
निवल बिक्री प्राप्ति	सूचीबद्ध	***	***	***	***
प्रवृत्ति	रु./किग्रा.	100	108	106	108
लाभ/हानि	सूचीबद्ध	***	***	***	***
प्रवृत्ति	रु./किग्रा.	100.00	60	145	30
लाभ/हानि	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	109	175	48
ब्याज पूर्व लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	112	154	65
नकद लाभ		***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	105	135	72
निवेश पर आय	%	***	***	***	***

प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	98	122	42
-----------	----------	-----	----	-----	----

51. उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तत्काल पूर्ववर्ती और आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान उत्पादन लागत तथा निवल बिक्री कीमत दोनों में वृद्धि हुई है। तथापि, बिक्री लागत में वृद्धि बिक्री कीमत से अधिक हुई है। साथ ही साथ तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान आयात की पहुंच कीमत में गिरावट आई है। तथापि, जांच अवधि के दौरान ब्याज पूर्व लाभ, नकद लाभ और निवेश पर आय में गिरावट आई है।

मालसूची

52. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के पास मालसूची में गिरावट आई है।

विवरण	इकाई	2008-09	2009-10	2010-11	जांच अवधि
औसत स्टॉक	मी.ट.	145.06	164.72	164.44	182.21
औसत स्टॉक	सूचीबद्ध	100	114	113	126

रोजगार, मजदूरी तथा उत्पादकता

53. यह नोट किया जाता है कि क्षति अवधि के दौरान रोजगार और मजदूरी में सुधार हुआ है और उत्पादकता में उत्पादन के अनुरूप घट-बढ़ हुई है।

विवरण	इकाई	2008-09	2009-10	2010-11	जांच अवधि
रोजगार	संख्या	68	78	98	99
मजदूरी	सूचीबद्ध	100	114	143	144
मजदूरी	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	139	167	179
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी.ट.	48.93	46.81	41.41	37.91
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	96	85	77
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी.ट.	9.55	10.44	11.54	10.68
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	109	121	112

ड. वृद्धि

54. यद्यपि कुछ आर्थिक मापदंडों में घरेलू उद्योग ने सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित की है तथापि, पाटित आयातों के कारण जांच अवधि के दौरान मात्रा और कीमत दोनों मापदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है ।

पाटन मार्जिन की मात्रा

55. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जन.गण. से आयातों के संबंध में निर्धारित पाटन मार्जिन काफी अधिक है । तथापि, जांच अवधि में जापान से संबद्ध वस्तु के किसी आयात की सूचना नहीं दी गई है । जापान से संभावित पाटन मार्जिन भी सकारात्मक है ।

पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता

56. प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच में घरेलू उद्योग के घटक अधिकांश आवेदक एकल उत्पाद कंपनियां हैं । अतः यदि पाटन जारी रहता है तो घरेलू उद्योग की पूंजी जुटाने की क्षमता प्रभावित होगी ।

ढ. अन्य ज्ञात कारक और कारणात्मक संबंध:**घरेलू उद्योग के अनुरोध**

57. मूल जांच में कारणात्मक संबंध की पुष्टि की जा चुकी है । वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच में माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी को इस बात की जांच करनी है कि क्या पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से पाटन और क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना होगी । अतः इस बात की जांच में कि क्या पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना होगी, ऐसा विश्लेषण अंतर्ग्रस्त होता है कि सकारात्मक जांच परिणाम तभी दर्ज किया जाएगा यदि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना हो । इससे इस बात की स्पष्ट पुष्टि होती है कि क्षति का सकारात्मक जांच परिणाम उस मामले में ही दर्ज किया जाएगा जहां पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने और क्षति की पुनरावृत्ति होने या उसके जारी रहने के बीच संबंध हो ।

58. पाटन जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना और क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना के बीच कारणात्मक संबंध मौजूद है ।

प्राधिकारी द्वारा जांचकारणात्मक संबंध

59. अधिनियम की धारा 9 क(5) के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा पाटन और क्षति की संभावना और शुल्क जारी रखने की जरूरत की जांच करनी अपेक्षित होती है। इसके बावजूद प्राधिकारी ने इस बात की जांच की निम्नानुसार जांच की है कि क्या अन्य ज्ञात कारकों से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है। :

i. तीसरे देशों से आयात: - ताईवान, तुर्की और अमरीका से आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच चल रही है। किसी अन्य देश से हुए आयात या तो न्यूनतम सीमा से कम हैं या फिर आयात कीमत अधिक है। अतः किसी अन्य देश से हुए आयातों का घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ सकता है।

ii. मांग में कमी: - प्राधिकारी नोट करते हैं कि मांग में कोई कमी नहीं आई है क्योंकि समूची क्षति अवधि के दौरान देश में संबद्ध वस्तु की मांग में लगातार वृद्धि हुई है।

iii. खपत की पद्धति: - यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी की जानकारी में संबद्ध वस्तु हेतु खपत की पद्धति में कोई खास परिवर्तन नहीं लाया गया है और न ही किसी हितबद्ध पक्षकार ने इस बारे में कोई अनुरोध किया है।

iv. प्रतिस्पर्धा की स्थितियां: - प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच से यह पता नहीं चला है कि प्रतिस्पर्धा की स्थितियां या व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति के लिए जिम्मेवार हैं।

v. प्रौद्योगिकी विकास: - प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच से यह पता नहीं चला है कि प्रौद्योगिकी में ऐसा कोई खास परिवर्तन हुआ है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है।

vi. निर्यात निष्पादन: घरेलू उद्योग ने संबद्ध वस्तु की निर्यात बिक्री भी की है। तथापि क्षति विश्लेषण घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन को शामिल किए बिना किया गया है।

ण. क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना

60. क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना के बारे में घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- i. चीन जन.गण. में उत्पादकों के पास परसल्फेट्स का उत्पादन करने की विशाल क्षमताएं हैं। पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से संबद्ध वस्तु की आयात मात्रा में आगे और वृद्धि होना लाजिमी है।
- ii. शुल्क लागू किए जाने के बाद संबद्ध देशों से आयातों में गिरावट आई है। तथापि, जांच अवधि के दौरान चीन जन.गण. से आयातों में पुनः वृद्धि हुई है। पाटन आयातों की ऐसी सतत मौजूदगी से घरेलू उद्योग पाटन के पिछले प्रभावों से पूर्णतः उबरने में सक्षम नहीं हुआ है। वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए

- जाने से घरेलू उद्योग को या तो पाटनरोधी शुल्क की राशि तक कीमत में कमी करनी होगी या फिर वर्तमान बिक्री कीमत बनाए रखनी होगी । दोनों ही स्थिति में उसे वास्तविक क्षति होगी ।
- iii. जिस कीमत पर चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु का आयात किया जा रहा है वह उस कीमत से काफी कम है जिस पर वस्तु की बिक्री भारतीय बाजार में हो रही है । अतः शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में निर्यातक भारतीय बाजार में अपने उत्पादन का पुनः सरणीयन कर देंगे क्योंकि उनके पास पहले से ही बेशी क्षमताएं हैं और तीसरे देशों के लिए संबद्ध वस्तु की बिक्री भी काफी कम कीमतों पर हो रही है ।
- iv. पाटनरोधी शुल्क के अभाव में चीन जन.गण. के मामले में कीमत कटौती काफी अधिक है ।
- v. जापान द्वारा तीसरे देशों को संबद्ध वस्तु का निर्यात ऐसी कीमत पर किया जा रहा है जो घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत बिक्री कीमत से काफी कम है । याचिकाकर्ताओं ने अनुरोध किया है कि ऐसा वर्तमान पाटनरोधी शुल्क की सुरक्षा के कारण हुआ है कि जापान भारत में संबद्ध वस्तु का पाटन नहीं कर रहा है । पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से जापान से पाटन की पुनरावृत्ति होगी ।
- vi. चीन में संबद्ध वस्तु के लिए व्यापक उत्पादन क्षमता है । चीन के केवल 8 उत्पादकों के बारे में नीचे दी गई सूचना से यह पता चलता है कि संबद्ध वस्तु की उनकी सामूहिक क्षमता 1,32,000 मी.ट. है । :

क्र.सं०	चीन में उत्पादक	क्षमता (मी०ट०)
1	शंघाई एनसिन कैमिकल कं० लि०	5,000
2	डेगुस्सा-आज (शंघाई) इनिटिएटर्स कं., लि०	15,000
3	फ्यूजियान जियानयू योंगशेंग इंडस्ट्री कं० लि०	35,000
4	हेबिजियांग ग्रुप कं०, लि०	27,000
5	हेंगशुइ जियामू कैमिकल कं० लि०	18,000
6	फ्लिडा इंडस्ट्री कं० लि.	15,000
7	झाऊआ कैमिकल इंडस्ट्रियल कं० लि०	27,000
8	ए बी सी कैमिकल (शंघाई) कं० लि०	6,000
	कुल	1,32,000

- vii. चीन के उत्पादकों के पास संबद्ध वस्तु की अत्यधिक अप्रयुक्त क्षमताएं भी हैं ।
- viii. चीन से विचाराधीन उत्पाद का लगातार पाटन हो रहा है; वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद के पाटन में वृद्धि होने की संभावना है ।
- ix. पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बावजूद चीन से आयातों में समग्र रूप में और भारत में उत्पादन तथा खपत की तुलना में वृद्धि हुई है ।
- x. घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण अभी भी क्षति हो रही है; पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से घरेलू उद्योग को क्षति और गंभीर हो जाएगी ।

- xi. चीन से लगातार पाटन हो रहा है और घरेलू उद्योग को परिणामी क्षति हो रही है । यदि यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है, तो भी घरेलू उद्योग का निष्पादन नाजुक बना हुआ है । इसके अलावा, यदि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किया जाता है तो पाटन और परिणामी क्षति जारी रहने और उसमें और अधिक वृद्धि होने की संभावना है ।
- xii. निम्नलिखित कारकों से यह संकेत मिलता है कि लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना है :

क. संबद्ध देश द्वारा धारित अत्यधिक उत्पादन क्षमता

- चीन के उत्पादकों/निर्यातकों के पास अत्यधिक उत्पादन क्षमताएं हैं जैसा कि निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है । वर्तमान शुल्क समाप्त किए जाने से चीन से पाटन में निश्चित तौर पर वृद्धि होगी और अंततः उससे घरेलू उद्योग को क्षतिकारी मात्रा और कीमत में बढ़ोत्तरी होगी ।

क्र.सं०	चीन में उत्पादक	क्षमता (मी०ट०)
1	शंघाई एनसिन कैमिकल क० लि०	5,000
2	डेगुस्सा-आज (शंघाई) इनिटिएटर्स क., लि०	15,000
3	फ्यूजियान जियान्यू योंगशेंग इंडस्ट्री क० लि०	35,000
4	हेंबेजियांग ग्रुप क०, लि०	27,000
5	हेंगशुइ जियामू कैमिकल क० लि०	18,000
6	फ्लिडा इंडस्ट्री क० लि०	15,000
7	झांगहुआ कैमिकल्स इंडस्ट्रियल क० लि०	27,000
8	ए बी सी कैमिकल (शंघाई) क० लि०	6,000
	कुल	1,32,000

ख. घरेलू उद्योग की नाजुकता

- घरेलू उद्योग की नाजुकता इस बात से संबंधित है कि क्या लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में उद्योग को वास्तविक क्षति होगी । ऐसी स्थिति में प्राधिकारी को इस बात पर विचार करना चाहिए कि क्या शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में उद्योग का आगे और हास होगा ।
- शुल्क लागू किए जाने के बाद संबद्ध देशों से आयातों में गिरावट आई है । तथापि, जांच अवधि के दौरान चीन जन.गण. से आयातों में पुनः वृद्धि हुई है । पाटित आयातों की ऐसी सतत मौजूदगी से घरेलू उद्योग पाटन के पिछले प्रभावों से पूर्णतः उबरने में सक्षम नहीं हुआ है । वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से घरेलू उद्योग को या तो पाटनरोधी शुल्क की राशि तक कीमत में कमी करनी होगी या फिर वर्तमान बिक्री कीमत बनाए रखनी होगी । दोनों ही स्थिति में उसे वास्तविक क्षति होगी ।

ग. भारतीय बाजार की कीमत आकर्षकता

- जिस कीमत पर चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु का आयात किया जा रहा है वह उस कीमत से काफी कम है जिस पर वस्तु की बिक्री भारतीय बाजार में हो रही है । अतः शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में निर्यातक भारतीय बाजार में अपने उत्पादन का पुनः सरणीयन कर देंगे क्योंकि उनके पास पहले से ही बेशी क्षमताएं हैं और तीसरे देशों के लिए संबद्ध वस्तु की बिक्री भी काफी कम कीमतों पर हो रही है ।

घ. उपायों के अभाव में कीमत कटौती

- जैसा कि पूर्व में अनुरोध किया गया है, वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से कीमत में अत्यधिक कटौती होगी ।

ड. उसी उत्पाद पर अन्य देशों में पाटनरोधी शुल्क की मौजूदगी

- चीन पर अमरीका और यूरोप में पाटनरोधी शुल्क लागू है । अमरीका ने परसल्फेट्स के आयातों के खिलाफ अपनी दूसरी समीक्षा की है और शुल्क लगाया है । अमरीका द्वारा हाल ही में की गई प्रशासनिक समीक्षा में चीन द्वारा पाटन की पुनः पुष्टि की गई है और 119.02 प्रतिशत की दर से शुल्क लगाया गया है । इसके अलावा ई यू ने अप्रैल, 2002 में चीन से परसल्फेट्स पर अपने 1995 के पाटनरोधी शुल्क आदेश को रद्द करने के बाद अक्टूबर, 2007 में शुल्क पुनः लागू किया है । चीन पर लागू वर्तमान पाटनरोधी शुल्क की दर काफी अधिक 72 प्रतिशत है ।
- निर्यातक जब तक इस बात की पुष्टि नहीं करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन जारी रहने, उसमें वृद्धि होने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना नहीं है, तब तक यह माना जाना चाहिए कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन जारी रहेगा या उसकी पुनरावृत्ति होगी या उसमें वृद्धि होगी । चूंकि वर्तमान मामले में संबद्ध देशों के उत्पादकों/निर्यातकों ने उत्तर नहीं दिया है, इसलिए पाटन और क्षति की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

61. वर्तमान जांच चीन जन.गण. और जापान से संबद्ध वस्तु के आयातों पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा है । नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी के लिए यह निर्धारण करना अपेक्षित है कि क्या पाटनरोधी शुल्क को निरंतर लागू रखने की जरूरत है । इसके लिए इस बात की जांच भी अपेक्षित है कि क्या लगाए गए शुल्क से क्षतिकारी पाटन को समाप्त करने का निर्दिष्ट उद्देश्य प्राप्त हो रहा है । वर्तमान मामले में चूंकि चीन जन.गण. से लगातार पाटित आयात हो रहे हैं, इसलिए प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित नहीं है कि क्या शुल्क समाप्त किए जाने से चीन जन.गण. से उत्पाद का सतत पाटन होने की संभावना है । तथापि, इस बात पर विचार करते हुए कि मूल और वर्तमान जांच में पाटन मार्जिन

काफी अधिक है और यह कि जहां तक संबद्ध वस्तु की मांग और कीमत का संबंध है, भारतीय बाजार में अनुकूल बाजारी स्थितियां हैं, प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जन.गण. के संबंध में शुल्क समाप्त किए जाने पर पाटन जारी रह सकता है। वस्तुस्थिति यह है कि लागू पाटनरोधी उपायों के बावजूद चीन जन.गण. द्वारा घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने के लिए भारतीय बाजार में अत्यधिक मौजूदगी बनाई हुई है।

62. प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान क्षति अवधि के दौरान चीन जन.गण. से विद्यारूधीन उत्पाद का आयात समग्र रूप में काफी अधिक हुआ है। मौजूदा पाटनरोधी शुल्क के बावजूद चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु का पाटित कीमतों पर आयात जारी है। जहां तक कीमत प्रभाव का संबंध है, यह देखा गया है कि आयातों के कारण पाटनरोधी शुल्क के बिना घरेलू उद्योग की कीमत में अत्यधिक कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री हो रही है, पाटनरोधी शुल्क के साथ भी चीन जन.गण. से सकारात्मक कीमत कटौती संबंधी प्रभाव पड़ा है। विभिन्न आर्थिक मापदंडों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि लागू पाटनरोधी उपाय के कारण वर्ष 2010-11 तक घरेलू उद्योग की समग्र आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है और उसके बाद जांच अवधि के दौरान चीन जन.गण. से पाटित आयातों के कारण गिरावट आई है। उपर्युक्त स्थिति को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पाटनरोधी उपाय समाप्त किए जाने की स्थिति में चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु के पाटन के कारण घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने की संभावना है।
63. जहां तक जापान का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बाद आयात मात्रा में गिरावट आई है। वस्तुतः वर्ष 2010-11 और जांच अवधि में जापान से कोई आयात नहीं हुआ है। तथापि, वर्ल्ड ट्रेड एटलस में उपलब्ध सूचना के आधार पर प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान अन्य देशों को जापान से ***अम. डा./मी.ट. की औसत कीमत पर 7856 मी.ट. का भारी मात्रा मनीर्यात हुआ है। प्राधिकारी आगे यह नोट करते हैं कि जांचोत्तर अवधि के दौरान जापान ने तीसरे देशों को ***अम. डा./मी.ट. की औसत कीमत पर 4668 मी.ट. का निर्यात किया है।
64. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के उत्पादकों/निर्यातकों से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है। तथापि, घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त सूचना और उपलब्ध अन्य सूचना के आधार पर प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन के उत्पादकों के पास विशाल उत्पादन क्षमता है। इसके अलावा, जैसा कि घरेलू उद्योग ने अनुरोध किया है, कि चीन जन.गण. पर अमरीका और यूरोप में भी पाटनरोधी शुल्क लागू है। जांच अवधि के दौरान भारतीय बाजार में मांग में अत्यधिक वृद्धि पर विचार करते हुए और लागू पाटनरोधी शुल्क के बावजूद संबद्ध वस्तु के सतत पाटन को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी नोट करते हैं कि मौजूदा शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में सतत पाटन, घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है।

त. क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन

65. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु की क्षति रहित कीमत का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III के अनुसार किया है। इस प्रकार निर्धारित क्षति रहित कीमत की तुलना जांच अवधि के दौरान क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु के निर्यातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है और जापान के संबंध में संभावित क्षति मार्जिन निम्नानुसार है:

चीन जन.गण.

विवरण	यू ओ एम	ए पी एस	एस पी एस	पी पी एस	भारत औसत
क्षति रहित कीमत	रू./किग्रा.	***	***	***	***
पाटनरोधी शुल्क रहित पहुंच कीमत	रू./किग्रा.	46.54	72.88	-	50.80
क्षति मार्जिन	रू./किग्रा.	***	***	-	***
	अम.डा./किग्रा.	***	***	-	***
	%	***	***	-	***
	रेंज	40-50	35-45	-	40-50

जापान

विवरण	यू ओ एम	भारत औसत
क्षति रहित कीमत	रू./किग्रा.	***
पाटनरोधी शुल्क रहित पहुंच कीमत	रू./किग्रा.	74.38
क्षति मार्जिन	रू./किग्रा.	***
	अम.डा./किग्रा.	***
	%	***
	रेंज	0-10

प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान चीन जन.गण. के संबंध में क्षति मार्जिन और जापान के संबंध में संभावित क्षति मार्जिन सकारात्मक है। तथापि, जांचोत्तर अवधि के दौरान दोनों देशों से संभावित क्षति मार्जिन भी निम्नलिखित तालिका के अनुसार सकारात्मक है।

जांचोत्तर अवधि में संभावित क्षति मार्जिनचीन जन.गण.

विवरण	यू ओ एम	
क्षति रहित कीमत	अम.डा./किग्रा.	***

पाटनरोधी शुल्क रहित पहुंच कीमत	अम.डा./किग्रा.	1.12
क्षति मार्जिन	अम.डा./किग्रा.	***
क्षति मार्जिन	%	***
क्षति मार्जिन	रेंज	35-45

जापान

विवरण	यू ओ एम	
क्षति रहित कीमत	अम.डा./किग्रा.	***
पाटनरोधी शुल्क रहित पहुंच कीमत	अम.डा./किग्रा.	1.48
क्षति मार्जिन	अम.डा./किग्रा.	***
क्षति मार्जिन	%	***
क्षति मार्जिन	रेंज	5-15

थ. प्रकटन विवरण के पश्चात टिप्पणियां

66. घरेलू उद्योग द्वारा प्रकटन विवरण के बाद की गई टिप्पणियां निम्नानुसार हैं :-

- चीन से भारत को पाटित कीमतों पर विचाराधीन उत्पाद का निर्यात जारी है। जापान से आयातों के मामले में पाटन और घरेलू उद्योग को परिणामी क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना है।
- चीन से हुए आयातों के मामले में घरेलू उद्योग को सतत क्षति हुई है।
- केलीबर कैमिकल्स के बारे में उल्लिखित क्षमता संबंधी आंकड़ों में टंकण संबंधी त्रुटि है। इस अवधि के दौरान कंपनी ने संयंत्र और मशीनरी तथा भवन में भारी वृद्धि की है।
- निर्धारित क्षति रहित कीमत भी काफी कम है। प्राधिकारी को वास्तविक कच्ची सामग्री और उपयोगिताओं की खपत तथा वास्तविक उत्पादन पर विचार करना चाहिए। लगाई गई पूंजी का निर्धारण अचल परिसंपत्तियों के वर्तमान मूल्य पर विचार करते हुए या कम से कम अचल परिसंपत्तियों के सकल मूल्य पर विचार करते हुए किया जाना चाहिए।
- तीसरे देशों को हुए निर्यातों के संबंध में अत्यधिक पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन के मददेनजर पाटनरोधी शुल्क की उसी मात्रा को लागू करना अपेक्षित है।
- उपाय के स्वरूप की निर्धारित मात्रा के रूप में रखना अपेक्षित है और पाटनरोधी शुल्क की मुद्रा को बदलकर अम.डॉ. करना अपेक्षित है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

67. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को छोड़कर किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने प्रकटन विवरण के बाद कोई टिप्पणी नहीं की है। प्राधिकारी आगे यह नोट करते हैं कि प्रकटन विवरण के बाद घरेलू उद्योग द्वारा की गई

अधिकांश टिप्पणियां उनके पूर्ववर्ती अनुरोधों की मात्र पुनरावृत्ति हैं। तथापि, घरेलू उद्योग की जिन टिप्पणियों पर प्राधिकारी ने विचार किया है उन पर निम्नानुसार कार्रवाई की गई है :

- i. जहां तक वर्तमान जांच में घरेलू उद्योग के घटक घरेलू उत्पादकों में से एक उत्पादक मै0 कैलीबर कैमिकल्स की क्षमता के बारे में घरेलू उद्योग के दावे का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबंधित उद्योग के आंकड़ों/सूचना का सत्यापन किया गया है और प्राधिकारी ने सत्यापित सूचना को स्वीकार कर उसे अंगीकृत किया है।
- ii. जहां तक घरेलू उद्योग के इस तर्क का संबंध है कि निर्धारित क्षति रहित कीमत काफी कम है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति रहित कीमत का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-111 में निर्धारित सिद्धांतों के अनुसार किया गया है।

द. भारतीय उद्योग का हित और अन्य मुद्दे

68. प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से भारत में उत्पाद के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं। तथापि, पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से पाटन के व्यवहार द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्ति होंगे, घरेलू उद्योग का हराश रुकेगा और उपभोक्ताओं के लिए सम्बद्ध वस्तु का व्यापक विकल्प उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी। कार्यकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों से सम्बद्ध देश से आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। उपभोक्ता अभी भी आपूर्ति के 2 या अधिक स्रोत रख सकते हैं।

69. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने का उद्देश्य सामान्यतः पाटन के अनुचित व्यापार व्यवहारों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति लाई जा सके जो देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से संबद्ध देशों से आयात प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।

घ. निष्कर्ष

70. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों, प्रदत्त सूचना और किए गए अनुरोधों तथा इस अंतिम जांच परिणाम में दर्ज किए गए अनुसार प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों को ध्यान में रखते हुए और पाटन तथा परिणामी क्षति जारी रहने एवं पाटन तथा क्षति जारी रहने/उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना की स्थिति के उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि:

- i. क्षति अवधि के दौरान चीन जन.गण. से आयातों में वृद्धि हुई है और उसका काफी बड़ा हिस्सा बना हुआ है ;

- ii. भारत में उत्पादन और खपत की तुलना में चीन जन.गण. से पाटित आयातों की मात्रा काफी अधिक है;
- iii. चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु का सतत पाटन हो रहा है और पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन के जारी रहने की संभावना है और पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन जारी रहने की संभावना है ।
- iv. पाटनरोधी शुल्क के बिना कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री संबंधी प्रभाव अत्यधिक सकारात्मक है;
- vi. यद्यपि, घरेलू उद्योग ने कुछ आर्थिक मापदंडों में सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित की है, तथापि, जांच अवधि के दौरान पाटित आयातों के कारण मात्रा और कीमत दोनों मापदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में आम तौर पर गिरावट आई है ।
- viii. चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु पाटित कीमतों पर भारतीय बाजार में प्रवेश कर रही है और पाटन मार्जिन न्यूनतम सीमा से अधिक है । यदि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किया जाता है तो संबद्ध वस्तु के पाटन से घरेलू उद्योग को क्षति जारी रह सकती है ।
- ix. जहां तक जापान का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद आयात मात्रा में गिरावट आई है । वस्तुतः वर्ष 2010-11 और जांच अवधि में जापान से कोई आयात नहीं हुआ है । तथापि, विश्व भर में संबद्ध वस्तु के जापानी निर्यातों की मात्रा और कीमत को ध्यान में रखते हुए पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में भारत में संबद्ध वस्तु का पाटन होने और घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचने की संभावना है ।
- x. जांचोत्तर अवधि के दौरान जांच अवधि की तुलना में चीन जन.गण. के संबंध में पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन में कमी आई है । जहां तक जापान का संबंध है, जांचोत्तर अवधि के दौरान यद्यपि, शून्य हुए हैं, तथापि, जापान से तीसरे देशों को हुए निर्यातों के आधार पर निर्धारित संभावित पाटन मार्जिन एवं संभावित क्षति मार्जिन से जांच अवधि हेतु इसी प्रकार से निर्धारित पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन की तुलना में पाटन तथा क्षति में आगे और वृद्धि होने का संकेत मिलता है ।

न सिफारिशें

71. उपर्युक्तानुसार निष्कर्ष निकालने के बाद प्राधिकारी का यह मत है कि चीन जन.गण. के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के संबंध में निम्नलिखित शुल्क तालिका में यथा विनिर्दिष्ट पाटनरोधी उपाय में संशोधन करना और उसकी अवधि बढ़ाना अपेक्षित है ।

72. जहां तक जापान का संबंध है, यह निष्कर्ष निकालने के बाद कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में जापान के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के पाटन और होने वाली क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना है, प्राधिकारी का यह मत है कि 20 जुलाई, 2007 की अंतिम जांच परिणाम संबंधी

अधिसूचना सं० 14/1/2006-डी जी ए डी के तहत पूर्व में यथासंस्तुत और केन्द्र सरकार द्वारा 29 अगस्त, 2007 की अधिसूचना सं० 96/2007 (वैधता को 4 अप्रैल, 2012 की अधिसूचना सं० 20/2010-सी.शु (ए डी डी) के तहत बढ़ाया गया) के तहत लागू किए गए पाटनरोधी उपाय की अवधि को बढ़ाना अपेक्षित है ।

73. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए चीन जन.गण. के संबंध में प्राधिकारी निम्नलिखित शुल्क तालिका में किए गए उल्लेखानुसार पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन, जो भी कम हो, के बराबर पाटनरोधी शुल्क लागू करने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त की जा सके । जहां तक जापान का संबंध है, प्राधिकारी केन्द्र सरकार द्वारा 29 अगस्त, 2007 की अधिसूचना सं० 96/2007-सी.शु. (वैधता को 4 अप्रैल, 2012 की अधिसूचना सं० 20/2010-सी.शु (ए डी डी) के तहत बढ़ाया गया) के तहत पूर्व में लगाए गए वर्तमान पाटनरोधी शुल्क की अवधि में निम्नलिखित शुल्क तालिका में किए गए उल्लेखानुसार वृद्धि करने की सिफारिश करते हैं।

शुल्क तालिका

क.सं.	शीर्ष/उपशीर्ष	वस्तु विवरण*	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क की राशि	इकाई	मुद्रा
(1)	(2)	(3)		(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1.	2833 40 00	पेरक्सोसल्फेट्स या परसल्फेट	अमोनियम परसल्फेट, पोटेशियमपरसल्फेट्स या सोडियमपरसल्फेट्स	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	कोई	कोई	420	मी.ट.	अम.डा.
2	2833 40 00	पेरक्सोसल्फेट्स या परसल्फेट	अमोनियम परसल्फेट्स	चीन जन.गण.	कोई	कोई	कोई	420	मी.ट.	अम.डा.
3	2833 40 00	पेरक्सोसल्फेट्स या परसल्फेट	अमोनियम परसल्फेट्स	कोई	चीन जन.गण.	कोई	कोई	420	मी.ट.	अम.डा.
4	2833 40 00	पेरक्सोसल्फेट्स या परसल्फेट	अमोनियम परसल्फेट्स	जापान	जापान	कोई	कोई	822	मी.ट.	अम.डा.
5	2833 40 00	पेरक्सोसल्फेट्स या परसल्फेट	अमोनियम परसल्फेट्स	जापान	कोई	कोई	कोई	822	मी.ट.	अम.डा.
6	2833 40 00	पेरक्सोसल्फेट्स या परसल्फेट	अमोनियम परसल्फेट, पोटेशियमपरसल्फेट्स या सोडियमपरसल्फेट्स	कोई	जापान	कोई	कोई	822	मी.ट.	अम.डा.

न. आगे की प्रक्रिया

74. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य, सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 के अंतर्गत सीमा शुल्क प्राधिकारी द्वारा यथानिर्धारित आंकलन योग्य मूल्य होगा और उसमें सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर समस्त सीमा शुल्क शामिल होंगे।

75. इस आदेश के खिलाफ कोई अपील सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

जे. एस. दीपक, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 12th March, 2013

FINAL FINDING

Subject : Sunset Review Anti-dumping investigation concerning imports of 'Peroxisulphates' (also known as 'Persulphates') originating in or exported from China PR and Japan.

No.15/9/2011-DGAD:- Having regard to the Customs Tariff Act 1975, as amended from time to time (hereinafter also referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules 1995, as amended from time to time (hereinafter also referred to as the Rules) thereof;

A. BACKGROUND OF THE CASE

1. WHEREAS, the Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority), having regard to the Act and the Rules, recommended imposition of definitive anti-dumping duty in the original investigation vide Final Finding Notification No. 14/1/2006-DGAD dated 20th July, 2007 on the imports of 'Peroxisulphates' also known as 'Persulphates' (hereinafter also referred to as the subject goods) originating in or exported from China PR and Japan (hereinafter also referred to as the subject countries)
2. WHEREAS, the Central Government vide Notification No. 96/2007 - Customs, dated 29th August, 2007, imposed anti-dumping duties on the imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries.
3. WHEREAS, M/s Gujarat Persalts Pvt. Limited, M/s Calibre Chemicals Pvt. Limited, M/s VR Persulphates and M/s Yoyo Chemicals, the Indian domestic producers constituting domestic industry in the original investigation, have jointly filed a duly substantiated application before the Authority, in accordance with the Act and the Rules, alleging dumping of the subject goods, originating in or exported from the subject countries, and have requested for review, continuation and enhancement of the relevant anti-dumping duties.

4. In view of the duly substantiated application filed on behalf of the domestic industry and in accordance with Section 9A(5) of the Act, read with Rule 23 of the Rules; the Authority initiated a sunset review (SSR) investigation vide Notification No.15/9/2011-DGAD dated 13.03.2012, to review the need for continued imposition of the anti-dumping duties in force, in respect of the imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries, and to examine whether the expiry of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury to the domestic industry. The validity of the anti-dumping duties imposed on the imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries, has been extended up to 18.03.2013 by the Central Government vide Notification No.20/2012-Customs (ADD) dated 04.04.2012.
5. The scope of the present review covers all aspects of the previous investigations concerning imports of the subject goods originating or exported from the subject countries.

B. PROCEDURE

6. The procedure described below has been followed with regard to the subject investigation:
- i. The Embassies of the subject countries in New Delhi were informed about the initiation of the subject investigation in accordance with Rule 6(2) of the Rules.
 - ii. The Authority provided copies of the non-confidential version of the application to the known exporters and the embassy of the subject countries in accordance with Rules 6(3) supra. A copy of the non-confidential version of the application was also made available in the public file and provided to other interested parties, wherever requested.
 - iii. The Authority forwarded a copy of the public notice to the known producers/exporters in China PR and Japan (whose names and addresses were made available to the Authority) as follows and gave them opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the letter in accordance with the Rules 6(2) & 6(4):

a	Fulida Industry Co. Ltd., China
b	HebeiJiheng Group Co. Ltd., China
c	Shanxi Baohua Technologies Co. Ltd., China
d	Dry Chlorine Corp (DCC), China
e	MitsuyaBoeki Ltd, Japan
f	Asahi Kasei Finechem Co., Ltd, Japan
g	Mitsubishi Chemical Corporation, , Japan

- iv. No response or submission has been filed by any of the producers/exporters from the subject countries.

- v. Questionnaire was also sent to the following known importers/users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4):

1	Gujarat Themis Biosyn Ltd.
2	Nicholas Piramal India Ltd.
3	Padma Agencies
4	AurobindoPharma Ltd
5	ArtekSurfin Chemicals Ltd.
6	Novartis India Ltd.
7	Zydex Industries
8	Venus Insulators Pvt. Ltd.

- vi. No response/submission has also been submitted by any of the importers/users/other interested parties.
- vii. Exporters, producers and other interested parties who have neither responded to the Authority, nor supplied information relevant to this investigation have been treated as non-cooperating interested parties.
- viii. A Market Economy Treatment (MET) questionnaire was also forwarded to all the known producers/exporters and the Embassy of China PR with the request to provide relevant information to the Authority within the prescribed time. While for the purpose of initiation the normal value in China PR was considered based on the cost of production of the subject goods in India, duly adjusted, the Authority informed the known producers/exporters from China PR that it proposes to examine the claim of the applicant in the light of para 7 and para 8 of Annexure I of Anti-dumping Rules, as amended. The exporters/producers of the subject goods from China PR were therefore requested to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in subparagraph (3) of paragraph 8 to enable the Authority to consider whether market economy treatment can be granted to cooperative exporters/ producers. However no response has been received from the producer/exporters of China PR in this regard.
- ix. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the injury period including the POI.
- x. The Authority compared the import data received from DGCI&S and the data furnished by the domestic industry based on secondary source i.e. IBIS and relied

upon the DGCI&S data in the present investigation. Further, the domestic industry also furnished the Japan Customs data in respect of exports of subject goods from Japan to third countries to determine the likely export price of subject goods from Japan to India, in view of the fact that Japan has NIL exports of the subject goods to India during the POI.

- xi. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties as per Rule 6(7).
- xii. Information was sought from the applicants to determine non-injurious price based on the cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) to ascertain whether Anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to domestic industry. Further, the Authority has determined the non-injurious price for the domestic industry in terms of the principles laid down in Annexure III to the Rules.
- xiii. The Authority held a public hearing on 08.02.2013 to hear the interested parties orally, which was attended only by the domestic industry and their representatives. The interested parties present at the time of hearing were advised to file written submissions of the views expressed orally and were also given an opportunity to file rejoinder, if any.
- xiv. Investigation was carried out for the period starting from 01.01.2011 to 31.12.2011 (POI) and the injury analysis has been done for the period 2008-09, 2009-10, 2010-11 and the POI.
- xv. The submissions made by the interested parties during the course of the investigation, to the extent considered relevant by the Authority, have been considered in this finding;
- xvi. On the spot verification of the data/information furnished by the domestic industry, to the extent considered necessary, was carried out by the Authority.
- xvii. Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has granted confidentiality, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.

- xviii. In accordance with Rule 16 of the Rules *supra*, the essential facts were disclosed by the Authority to the known interested parties vide a disclosure statement issued on 8th March, 2013 and comments received on the same, to the extent considered relevant by the Authority, have been considered in this finding.
- xix. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigations, or has significantly impeded the investigation, the Authority has treated such parties as non-cooperative and recorded the findings on the basis of the facts available.
- xx. *** in this notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- xxi. The Exchange rate adopted by the Authority in this disclosure statement is 1USD=46.84 INR as per customs notification.

C. Scope of Product under consideration and like article

Summations made by the Domestic Industry

- 7. The product under consideration is 'Peroxosulphates' commonly known as 'Persulphates'. Persulphates are a group of closely related compounds. These are produced as Alkali Metal salts which include Ammonium Persulphates (APS), Potassium Persulphates (PPS) and Sodium Persulphates (SPS). The present investigation is a sunset review investigation. The product involved in the original investigation and in the present sunset review investigation is the same as has been held by the Designated Authority in the previous investigations. The three types of persulphates have the same end-uses as an initiator and oxidizing agent in the textile and chemical industries and one can be substituted for another. All three salts are one and same product. Persulphates is an organic compound and is classified under subheading 283340 00 in Chapter 28 of the Customs Tariff Act.
- 8. There is no difference in the product under consideration produced by the domestic industry and imported from the subject countries. Product under consideration produced by the domestic industry and imported from the subject countries are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology followed by most of the producers world over, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers have used the two interchangeably. Product under consideration produced by the petitioners is like article to the goods imported from the subject countries.

9. Present investigation is a sunset review investigation. The Designated Authority has examined the issue of product under consideration and like article in the original investigation, which is relied upon. The goods produced by the domestic industry and imported from subject country are like articles in accordance with the Rules.
10. As regards the scope of the product under consideration and like article, in the original investigation the Authority held as under:

"4. The product under consideration in this investigation is Peroxosulphates (also known as Persulphates). Three types of Persulphates have been included in the present investigation, which are:

I) Ammonium Persulphate (APS), (NH₄)₂S₂O₈)

II) Potassium Persulphate (PPS) (K₂S₂O₈); and

III) Sodium Persulphate (SPS) (Na₂S₂O₈).

5. These Persulphates are a group of closely related compounds produced as Alkali Metal salts. These are the most sensitive and efficient oxidizing agents and releases active oxygen very efficiently and easily. All the three persulphates are manufactured electrochemically and have the same or substitutable end-uses as an initiator and oxidizing agent in the textile and chemical industries. All Persulphates are classified in Chapter 28 of the Customs Tariff Act, 1975 under subheading 2833 40 and under subheading 28334000 under the Indian Trade Classification (Based on Harmonized Commodity Description and Coding system). However, the above classification is indicative only and is no way binding on the scope of this investigation.

6. Based on the arguments of the domestic industry that the above types of persulphates should be included within the scope of the product under consideration as the manufacturing process, functions and uses of the persulphates are same and the products have considerable technical and commercial substitutability, the Authority, in its preliminary findings held that the three types of persulphates are required to be treated as alike and one product for the purpose of defining the 'product under consideration' in this case. No argument has been received from any interested party on the scope of product under consideration or like article. Therefore, the Authority confirms its preliminary findings in respect of the product under consideration and like article."

11. The present investigation being a sunset review investigation and anti-dumping duties, as earlier recommended by the Authority, being in force on the imports of the subject goods from the subject country, the Authority considers that the scope of the PUC in the present investigation remains the

same as that of the original investigation. Moreover, none of the interested parties have made any relevant submission requesting modification in the scope of the Product under consideration or disputing the likeness of the subject goods imported from the subject countries and produced and supplied by the domestic industry.

D. Standing and scope of the Domestic Industry

Submissions of the Domestic Industry

12. The following are the submissions made by the domestic industry as regards standing and scope of the domestic industry:

- i. The scope of domestic industry and standing are not relevant in a sun set review.
- ii. Nevertheless, M/s Gujarat Persalts Pvt. Ltd., M/s Calibre Chemicals Pvt. Ltd., M/s VR Persulphates Pvt. Ltd. and M/s Yoyo Chemicals Pvt. Ltd, the applicants in the present investigation, are the only producers of the subject goods in India and together they command 100% share in Indian production and therefore constitute domestic industry under the Rules. Further, none of the constituents of domestic industry have imported the subject product. Therefore, question of possible ineligibility within the meaning of rule 2(b) does not arise.

Examination by the Authority

13. The Authority notes that there is no submission received from any other interested parties contrary to the views offered by the domestic industry. In view of the above position and having regard to the Rules and information on record, the Authority holds that M/s Gujarat Persalts Pvt. Ltd., M/s Calibre Chemicals Pvt. Ltd., M/s VR Persulphates Pvt. Ltd. and M/s Yoyo Chemicals Pvt. Ltd, the applicants in the present investigation, constitute domestic industry for the purpose of the present sun set review investigation within the meaning of the Rules.

E. De Minimis Limit

14. As per the import data received by the Authority from the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) and other secondary sources, from China PR, the import of the subject goods from the subject country is significant and above de minimis level. However in case of Japan no import of the subject goods has been reported during POI.

F. Determination of Dumping Margin, Normal Value and Export Price

Determination of Normal value in China PR

Examination of Market Economy Claim

15. At the stage of initiation, the Authority proceeded with the presumption by treating China PR as a non-market economy country. Upon initiation, the Authority advised the producers/exporters in

China to respond to the notice of initiation and provide information relevant to determination of their market economy status. The Authority sent copies of the MET questionnaire to all the known exporters for rebutting presumption of non-market economy in accordance with criteria laid down in Para 8(3) of Annexure-I to the Rules. The Authority also requested Government of China through their Embassy in India to advise the producers/exporters in their country to provide the relevant information.

16. As per Paragraph 8, Annexure I to the Anti-dumping Rules, as amended, the presumption of a non-market economy can be rebutted if the exporter(s) from China PR provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) in Paragraph 8 and establish to the contrary. The cooperating exporter/producer of the subject goods from China are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether:-

- i. The decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;
- ii. The production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
- iii. Such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
- iv. The exchange rate conversions are carried out at the market rate.

Submissions of the Domestic Industry

17. The domestic industry has made following submissions in this regard:

- (i) China being a non-market economy, the Designated Authority is required to determine normal value in accordance with Para 7 of Annexure-I to the Rules. According to these Rules, the normal value in China can be determined on any of the following basis:
 - i. The price in a market economy third country,
 - ii. Constructed value in a market economy third country,

- iii. The price from such a third country to other country, including India,
 - iv. The price actually paid in India, adjusted to include a reasonable profit margin,
 - v. The price actually payable in India, adjusted to include a reasonable profit margin.
- (ii) The petitioners could not consider price from such third countries to other countries for the reasons (a) information is not available; (b) the price so adopted must be a price in the ordinary course of trade; (c) such information would also require cooperation from a producer in such third country. Petitioners propose that the Designated Authority may consider Europe or USA as a market economy third country.
- (iii) India is an appropriate surrogate country for Chinese producers. Not only consideration of India as a surrogate country would result in access to accurate and adequate information, there is no factual basis to consider that India would not be a proper surrogate country. India has been considered as an appropriate surrogate by other Investigating Authorities too.
- (iv) As the normal value in China can be determined on any of the above-mentioned basis, the normal value in China can thus be determined on the basis of (a) price in India, and (b) cost of production in India, duly adjusted, including selling, general and administrative expenses and profit.
- (v) The petitioners have, therefore, claimed constructed normal value for the subject country based on the information available for the domestic industry on grade-wise basis.
- (vi) China is a Non-market Economy. Moreover, in the present case, none of the Chinese producers have claimed MET. In view of the same, the normal value is required to be determined on the basis of Para-7 of Annexure-I to the Rules. Normal Value cannot be determined on the basis of price or constructed value in a market economy third country for the reason that the relevant information is not publicly available. Hence, Normal Value in China needs to be constructed on the basis of cost of production in India, duly adjusted.
- (vii) Efforts were made to get information/evidence of price of subject goods in the domestic market of Japan. Efforts were also been made to get price lists or quotations of producers of subject goods in Japan. However, the petitioners have not been able to get any information/evidence of price of subject goods in the domestic market of Japan.
- (viii) There is massive increase in Chinese exports to various third countries. This increase in export to third countries is despite anti-dumping duty imposed by European Union and USA.
- (ix) Exporters and producers from China have continued to dump Persulphates in the Indian market. The imports from China are still at dumped prices and dumping is likely to not only

continue but also intensify with the revocation of anti-dumping duties.

- (x) Chinese producers have been exporting the product to third countries at significant dumping prices as evident from the data given in the table below:

Price- US \$/MT	2008- 09	2009- 10	2010- 11	Jan- Dec'11	2011- 12	2012-13 (Apr- Dec)
India	1,134	950	880	1,045	1,073	1,048
Rest of the world	1,212	1,049	1,109	1,106	1,089	1,045
Total	1,211	1,048	1,107	1,106	1,089	1,045

- (xi) Whereas prices of the product have globally increased, export price from China to India and rest of the world has significantly declined over the period. This is evident in the information given below:

Price in US\$/ MT	2008- 09	2009- 10	2010- 11	Jan- Dec'11	2011- 12	2012-13 (Apr- Dec)
China to world	1,134	950	880	1,045	1,073	1,048
Japan to world	1,233	1,391	1,355	1,474	1,476	1,362
Difference	99	441	475	429	403	314

- (xii) Over the injury period, exports from Japan to India occurred only in 2008-09 in significant volumes, which were clearly at dumping prices. However, volume of export has thereafter declined significantly and there are no known imports of the product under consideration in the period of investigation, while volume of imports in 2009-10 and 2010-11 was extremely low in order to permit correct assessment of likely prices in case of cessation of anti-dumping duty. Given the extremely low volumes involving exports from Japan to India during 2009-10 and 2010-11, it can be safely considered that these transactions do not represent commercial transactions relating to consumption of the product in the country.
- (xiii) While export from Japan to India during 2008-09 were at significant dumping prices and while this clearly establishes likelihood of dumping and consequent injury in case of cessation of present anti-dumping duty, the price at which goods are being exported from Japan to rest of the world establishes that the export price from Japan to rest of the world is below the normal value for the product under consideration and the same clearly establishes likelihood of injury in case of cessation of present anti-dumping duty. While exports price from Japan to third country is clearly at dumping price, consideration of these prices as likely price of India would show that these exports would cause significant injury to the domestic industry. Further, the volume of exports from Japan to the rest of the world is quite significant.

- (xiv) China is the major exporter of Persulphates. China exports nearly 45,000 MT to the world. The administrative review conducted in 2011 by US has reconfirmed dumping by China and has imposed duty at the rate of 119.02 percent.
- (xv) Further, EU, after revoking its 1995 antidumping duty order on Persulphates from China in April 2002, re-imposed those duties in October 2007. The current antidumping duty rates applicable to China are as high as 72 percent. Further, EU has initiated sunset review investigation on anti-dumping duties in force on China on 10th October, 2012.
- (xvi) The dumping margin established at the time of original investigation was significant. Dumping margin in the current period remains significant. Dumping margin in respect of exports to third countries is also significant. Thus, it can be clearly seen that the dumping margin is not only more than de-minimus but is substantial. Should the present duty be revoked, this would certainly lead to intensified dumping.

Examination by the Authority

18. The Authority notes that Rule 6.8 of the Antidumping Rules provide that in a case where an interested party refuses access to, or otherwise does not provide necessary information within a reasonable period, or significantly impedes the investigation, the Authority may record its findings on the basis of the facts available to it.
19. The Authority notes that the known Chinese producers/exporters and the Government of China have been adequately notified about the requirement of submission of information in the form and manner prescribed and adequate opportunity was also granted to them to make their submissions in this regard. None of the exporters/producers from China PR have cooperated with the Authority and responded to the present investigation. Further, none of the interested parties have provided any other alternative basis, as defined in the Rules, on which normal value can be determined. In view of the above position and considering China as a non-market economy, the Authority has determined the normal value in accordance with para 7 of Annexure I of the Rules. In absence of sufficient information on record regarding the other methods as are enshrined in para 7 of Annexure I of Rules, the Authority has determined the normal value by adopting the method of "other reasonable basis".
20. Accordingly, the Authority has constructed the normal value for China PR on the basis of the cost of production in India, duly adjusted, including selling, general and administrative expenses and profit. Accordingly, the Authority constructed the normal value for China PR in respect of Ammonium Persulphate (APS), Sodium Persulphate (SPS) and Potassium Persulphate (PPS). The Authority notes that only Ammonium Persulphate (APS) and Sodium Persulphate (SPS) have been imported from China during the POI. The normal value so calculated for Ammonium Persulphate (APS), Sodium Persulphate (SPS) and Potassium Persulphate (PPS) is as follows:

Normal value - China	APS	SPS	PPS	Weighted Average
US \$ /Kg	***	***	-	***

G. Export Price - China PR

21. With regard to export price in China PR, the Authority observed that none of the exporters from the subject country have cooperated. Therefore, the Authority has considered weighted average CIF price as per transaction-wise import data provided by DGCI&S for determining export price. Separate export prices have been determined for three type of persulphates involved. The net ex-factory export prices have been determined after allowing for adjustments towards inland transportation, ocean freight and insurance etc. from the CIF value reported by DGCIS, on facts available basis, in the absence of complete information from any cooperative exporter from that country. Accordingly, net-export prices at the ex-factory level have been determined as follows:

Product Type	Net Export Price US\$/Kg
Ammonium Persulphate	0.82
Potassium Persulphate.	No imports during POI
Sodium Persulphate	1.31
Weighted Average	0.90

H. Dumping Margin - China PR

22. The ex-works normal values of individual types of subject goods have been compared with the respective ex-works export prices for determination of the dumping margins at product type levels and thereafter weighted average dumping margins for the product under consideration have been determined as follows:

Product Type	Import Volume kg	Normal Value US \$/kg	Export price US \$ kg	Dumping Margin US \$ /kg	Dumping Margin %
Ammonium Persulphate	370419	***	0.82	***	***

Potassium Persulphate	-	-	-	-	-
Sodium Persulphate	71500	***	1.31	***	***
Total Import Volume in Kg during POI	441919				
Weighted Average		***	0.90	***	***
Dumping Margin Range	-	-	-	-	40-50

23. The Authority notes that the dumping margin from China PR is not only above de-minimis but also substantial.

I. Determination of Normal value in Japan

Submissions of the Domestic Industry

24. The domestic industry has submitted that normal value for Japan may be constructed as per Rules since information/evidence of price of subject goods in the domestic market of Japan is not available.

Examination by the Authority

25. The Authority notes that none of the exporters/producers from Japan has provided any response or information on normal value as per the prescribed questionnaire. The Authority further notes that the known Japanese producers/exporters and the Government of Japan have been adequately notified about the requirement of submission of information in the form and manner prescribed and adequate opportunity was also granted to them to make their submissions in this regard. As per the DGCI&S data there are no imports from Japan in the POI as well. Under the circumstances, the Authority has determined the ex-works normal value of the subject goods for all exporters from Japan, as per facts available, as per Rule 6 (8) of Anti-Dumping rules, as follows:

	US \$ /Kg
Normal value for Japan	***

J. Export Price - Japan

26. In view of the "NIL" exports of the subject goods to India from Japan during the POI, the Authority has relied upon the average export price of the subject goods from Japan to world over on the basis of the data available in the World Trade Atlas. The Authority notes that the data relied upon in this regard does not show the subject goods type wise. Accordingly the Authority proposes to determine the likely net export price of the subject goods from Japan to India, with due adjustments, as follows:

	US \$ /Kg
Likely Net Export price of Japan	1.32

K. Likely Dumping Margin – Japan

27. The weighted average normal value and net export price of subject goods have been compared for determination of the dumping margin for the product under consideration as follows:

Particulars	Unit	
Normal Value	US \$ /Kg	***
Net export Price	US \$ /Kg	1.32
Dumping margin	US \$ /Kg	***
Dumping margin	%	***
	Range	0-10

28. Although the dumping margin determined as above in respect of Japan is positive, but the same cannot be relied upon for imposition of anti-dumping duty. However, the dumping so determined on the basis of third country exports of the subject goods from Japan can be accepted as an indicator for likelihood analysis.

29. The Authority further notes that the dumping margin in respect of China PR and the likely dumping margin in respect of Japan during the post POI is also positive as per the table below:

Likely Dumping Margin Post POI**China PR**

Particulars	UOM	
Normal Value	US \$/Kg	***
Net export Price	US \$/Kg	0.95
Dumping Margin	US \$/Kg	***
Dumping Margin	%	***
Dumping Margin	Range	35-45

Japan

Particulars	UOM	
Normal Value	US \$/Kg	***

Net export Price	US \$/Kg	1.27
Dumping Margin	US \$/Kg	***
Dumping Margin	%	***
Dumping Margin	Range	5-15

L. INJURY AND CAUSAL LINK DETERMINATION

Submissions of the Domestic Industry

30. Following submissions have been made by the domestic industry with regard to injury and causal link:

- a) There is continued dumping of the product under consideration from China;
- b) Dumping of the product under consideration is likely to intensify from subject country should the current anti-dumping duty be revoked;
- c) Chinese imports have increased in absolute terms and in relation to production and consumption in India despite anti-dumping duty in force.
- d) The imports from China PR are undercutting the prices of the domestic industry in the market. The landed price of imports without anti-dumping duties is significantly below the cost of production of the domestic industry leading to depressing effect on the prices of the domestic industry in the market.
- e) Imports are depressing the prices of the domestic industry and preventing the price increase that would have occurred in the absence of dumping.
- f) Performance of the Domestic Industry has improved up to 2010-11 and then deteriorated in the POI in terms of capacity utilization, domestic sales, market share, profits, return on investments, cash flow, etc. Once the existing anti-dumping duty is revoked, there is a strong possibility of recurrence of injury to the domestic industry from the subject countries.
- g) Capacity utilization and market share of the domestic industry has continuously declined.
- h) The domestic industry is still suffering injury from the imports of dumped subject goods; revocation of anti-dumping duty shall imply intensification of injury to the domestic industry.
- i) Import of Persulphate in to India, from various countries, attracting anti-dumping duty and otherwise, has increased significantly. As a result, market share of domestic industry has substantially declined and that of imports has substantially increased. Also, consequently, the capacity utilisation of the domestic industry declined significantly.
- j) There is steady increase in the demand throughout the injury period.
- k) The sales of the domestic industry could not increase in proportion to the increase in demand. In fact, the sales declined in the POI as compared to the previous two years.
- l) Imports declined after the imposition of anti-dumping duty but have again increased significantly during the POI. However, imports from Japan have substantially declined and reached nil levels in the POI. In this regard it is relevant to point out that anti-dumping duty is

in force on imports of the subject goods from China by USA and EU. Should the present anti-dumping duty be revoked, there would definitely be increase in the volume of imports from the subject countries.

- m) There are no imports from Japan, reason of which should be attributed to the current antidumping duty in force. However, Japans' exports of subject goods to third countries are significant.
- n) Market share of dumped Chinese imports declined till 2009-10. The same has, however, once again increased in the POI. Further, with the presence of dumping from fresh sources, the market share of the dumped imports has remained quite significant over the period.
- o) Domestic Industry is still suffering injury from the dumped imports. Market share of domestic producers should have substantially increased with the imposition of anti-dumping duties, as the domestic industry would have regained the market share earlier lost by the domestic industry. However, market share of the domestic industry has further declined.
- p) The landed price of imports is materially below the selling price and even cost of production of the Domestic Industry.
- q) Should the present anti-dumping duties be withdrawn, the landed price of imports shall be significantly lower than the selling price of the domestic industry. The cessation of anti-dumping duty shall therefore lead to significant price depression and consequently price underselling.
- r) There has been a significant increase in the dumped imports, both in absolute terms and relative to production or consumption in India. Further, there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India and the effect of the imports is to prevent price increases which otherwise would have occurred, to a significant degree.
- s) Despite increase in demand of the subject goods, addition of capacities by the domestic industry and imposition of anti-dumping duty, sales and production of the domestic industry did not increase in proportion and to the extent of increase in demand. In fact, growth in sales and production has declined in the POI as compared to the previous two years. Resultantly, the capacity utilization of the domestic industry has declined consistently.
- t) With the increase in demand of Persulphates, the Domestic Industry also increased its capacity so that it is able to cater the growing demand. However, capacity utilization declined. The decline in capacity utilization is despite increase in demand in the Country.
- u) Even when domestic sales of the domestic industry increased till 2010-11, the same declined thereafter. Further, the rate of increase in sales of the domestic industry in any case remained much below the rate of increase in demand. Thus, despite existence of capacities, further enhancement of capacities by the domestic industry and imposition of anti-dumping duty, the domestic industry was not able to improve its domestic sales and market share.
- v) Market share of domestic producers should have substantially increased with the imposition of anti-dumping duties, as the domestic industry should have regained the market share earlier lost to dumped imports. Market share of the domestic industry has, however, further declined. Market share of Indian producers, which was 79.5% in the base year of the original investigation, declined to 68.8% in the period of investigation of original case investigated by the Designated Authority. This has further declined to 57.34% in the POI, even though it had improved after imposition of anti-dumping duty.

- w) Profits of the Domestic Industry has shown significant decline in the POI. The increase in selling price is disproportionate to the costs. It is evident that the domestic industry prices could not increase in proportion to the cost increases. In fact, the selling price is declining. Consequently, profitability of the Domestic Industry has shown significant deterioration.
- x) Inventories with the Domestic Industry even though declined after the imposition of anti-dumping duty, the same is still quite significant.
- y) Productivity of the domestic industry has shown a decline. The decline in productivity is due to decline in production as a result of dumping of the product in the Country.
- z) Employment and wages have shown improvement in the injury period.
- aa) Growth of the Domestic Industry in terms of the majority of parameters such as, production, sales, market share, profits, return on investment, cash profits, etc. is negative.
- bb) Imports are depressing the prices of the Domestic Industry and preventing the price increase that would have occurred in the absence of dumping.
- cc) Performance of the Domestic Industry has deteriorated in terms of capacity utilization, domestic sales, market share, profits, return on investments, cash flow, etc.
- dd) Price undercutting is significantly positive.
- ee) Even though the domestic industry was able to improve its production and sales volumes to some extent, the increase was disproportionate to the increase in capacity. Further, the domestic industry lost production and sales in the POI.
- ff) Capacity utilization and market share of the domestic industry has continuously declined.

Examination by the Authority

31. In consideration of the various submissions made by the domestic industry in this regard and in view of absence of any response/submission by any producer/exporter of subject countries, the Authority proceeds to examine the current injury, if any, to the domestic industry before proceeding to examine the likelihood aspects of dumping and injury on account of imports from the subject countries.
32. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure-II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, “.... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles....” In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.
33. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the rules supra.

34. The present investigation is a sunset review of anti-dumping duties in force. Rule 23 provide that provisions of Rule 11 shall apply, mutatis mutandis in case of a review as well. The Authority has therefore determined injury to the domestic industry considering, mutatis mutandis, the provisions of Rule 11 read with Annexure II. Further, since anti-dumping duties are in force on imports of the product under consideration, the Authority considers that the fact of existing anti-dumping duties on the imports of subject goods from subject countries is required to be considered while examining injury to the domestic industry. The Authority has examined whether existing measure is sufficient or not to counteract the dumping which is causing injury.
35. According to Section 9 (A) (5) of the Customs Tariff Act, anti-dumping duty imposed shall, unless revoked earlier, cease to have effect on the expiry of five years from the date of such imposition; provided that if the Central Government, in a review, is of the opinion that the cessation of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury, it may, from time to time, extend the period of such imposition for a further period of five years and such further period shall commence from the date of order of such extension.
36. For the purpose of current injury analysis, the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports of the subject goods from the subject countries on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal links between the dumping and injury, if any. Accordingly, the volume and price effect of dumped imports have been examined as follows:

VOLUME EFFECT:

37. Volume effect of dumped imports and impact on domestic industry has been examined as follows:

Demand and Market Share

38. The Authority has determined demand or apparent consumption of the product in the Country as the sum of domestic sales of the Indian Producers and imports from all sources. The demand so assessed can be seen in the table below :

Demand	UOM	2008-09	2009-10	2010-11	POI
Sales of Domestic Industry	MT	2,066	2,524	2,655	2,420
China PR	MT	204	266	246	442
Japan	MT	68	2	-	-
Subject countries-Imports	MT	272	268	246	442
Other imports	MT	242	771	1,011	1,309
Total demand/consumption	MT	2,580	3,562	3,912	

					4,171
Market Share in Demand					
➤ Domestic Industry	%	80.09	70.85	67.88	58.01
➤ China PR	%	7.89	7.46	6.28	10.60
➤ Japan	%	2.64	0.06	-	-
➤ Subject countries	%	10.52	7.52	6.28	10.60
➤ Other Countries	%	9.39	21.63	25.84	31.39
➤ Total	%	100	100	100	100

39. Authority notes that demand of the subject goods in the country shows a positive trend over the injury period and has significantly increased during the POI as compared the preceding years. Sales of the domestic industry have shown improvement up to 2010-11 commensurate to increase in demand and in the presence of antidumping duty on dumped imports being in force. However, the sales of domestic industry have declined in the POI. Resultantly, the market share of the domestic industry also declined significantly. It is seen that the market share of China PR declined up to 2010-11 and then increased in the POI significantly. It is further noted that the market share of other countries has also increased significantly over the injury period. The Authority has already initiated investigations on imports of the product under consideration from USA, Taiwan and Turkey.

Import Volume & Market share

40. With regard to volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports either in absolute terms or relative to production or consumption in India.

Particulars	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI
China	MT	204	266	246	442
Japan	MT	68	2	-	-
Subject Countries	MT	272	268	246	442
Other Countries	MT	242	771	1,011	1309
Total Imports	MT	514	1,038	1,257	1,751
Market Share in Imports					
China	%	39.61	25.60	19.56	

					25.24
➤ Japan	%	13.24	0.19	-	-
➤ Subject countries	%	52.85	25.80	19.56	25.24
➤ Other Countries	%	47.15	74.20	80.44	74.76
➤ Total Imports	%	100	100	100	100
Subject countries Imports in relation to					
➤ Consumption/Demand in India	%	10.52	7.52	6.28	10.60
➤ Production in India	%	8.12	7.33	6.08	11.83

41. The Authority notes that volume of dumped imports from China PR has increased in the POI as compared to preceding year as well as base year. However, the imports from Japan have stopped completely as can be seen from the table above. Imports from the subject countries as a whole declined in relation to consumption and production up to 2010-11 and then increased in the POI. Imports from other countries have increased over the injury period.

Production, Capacity & Capacity Utilization

42. As per table given below, the Authority notes that the Production and capacity utilization of the domestic industry improved up to 2010-11 and then declined in the POI.

Particulars	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI
Installed capacity	MT	5,200	5,600	6,400	6,400
Production	MT	3343	3653	4041	3737
Capacity Utilization	%	64	65	63	58

Sales

43. The sales volume of the domestic industry shows a positive trend up to 2010-11 and then declined. It is noted that the sales of the domestic industry has declined despite having capacity to meet the increase in demand.

Particulars	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI
Domestic Sales	MT	2,066	2,524	2,655	2,420
<i>Indexed</i>		100.00	122	128	117

Total Demand	MT	2,580	3,562	3,912	4,171
<i>Indexed</i>		100	138	152	162

Market Share

44. The imports from China continue to hold significant share in the Indian market in the POI. The share of domestic Industry in domestic demand has declined over the injury period.

Market Share in Demand	UOM	2008-09	2009-10	2010-11	POI
➤ Domestic Industry	%	80.09	70.85	67.88	58.01
➤ China PR	%	7.89	7.46	6.28	10.60
➤ Japan	%	2.64	0.06	-	-
➤ Subject countries	%	10.52	7.52	6.28	10.60
➤ Other Countries	%	9.39	21.63	25.84	31.39

Price Effect of the dumped imports on the Domestic Industry

45. The impact on the prices of the domestic industry on account of imports of the subject goods from the subject countries have been examined with reference to price undercutting, price underselling, price suppression and price depression. For the purpose of this analysis the cost of production, net sales realization (NSR) and the non-injurious price (NIP) of the domestic industry have been compared with landed value of imports from the subject countries. A comparison for subject goods during the period of investigation was made between the landed value of dumped imports and the domestic selling price in the domestic market. In determining the net sales realization of the domestic industry, taxes, rebates, discounts and commission offered by the domestic industry have been adjusted. The price underselling is an important indicator of assessment of injury; thus, the Authority has worked out a non-injurious price and compared the same with the landed value to arrive at the extent of price underselling. The non-injurious price has been evaluated for the domestic industry by appropriately considering the cost of production for the product under consideration during the POI. The position is as follows:

Price undercutting and underselling effect

46. The Authority has made price undercutting and underselling analysis both with and without anti-dumping duty as below:

Price Undercutting: China PR

Particulars	UOM	APS	SPS	PPS	Weighted Average
Net Sales Realization	Rs./Kg	***	***	-	***
Landed Price	Rs./Kg	46.54	72.88	-	50.80
Price Undercutting without ADD	Rs./Kg	***	***	-	***
	%	***	***	-	***
	Range	25-35	15-25	-	35-45
Price Undercutting with ADD	Rs./Kg	(***)	(***)	-	***
	%	(***)	(***)	-	***
	Range	(15)-(25)	(10)-(20)	-	0-10

Price Under-selling: China PR

Particulars	UOM	APS	SPS	PPS	Weighted Average
Non-Injurious Price	Rs./Kg	***	***	***	***
Landed Price	Rs./Kg	46.54	72.88	-	50.80
Price Underselling without ADD	Rs./Kg	***	***	-	***
	%	***	***	-	***
	Range	25-35	25-35	-	30-40
Price Underselling with ADD	Rs./Kg	(***)	(***)	-	(***)
	%	(***)	(***)	-	(***)
	Range	(15)-(25)	(0)-(10)	-	(0)-(10)

The Authority notes that there are no imports of subject goods from Japan during the POI. The Authority further notes in respect of imports of the subject goods from China PR during the POI, the price undercutting, both with and without antidumping duty, is positive. As regards price underselling effect, it is positive without anti-dumping duty.

Price suppression and depression effects of the dumped imports:

47. In order to assess whether the imports from subject countries were suppressing/depressing the prices of the domestic industry, the Authority has compared the cost of production and net selling price of the domestic industry along with the landed price of imports over the injury period without anti dumping duty, which is given in the following table:

Particulars	UOM	2008-09	2009-10	2010-11	POI
Cost of production	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Index	100.00	120	95	127
Net selling Price	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Index	100	107	106	107
Profit/Loss	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Index	100	59	144	30
Landed Price China PR	Rs./Kg	56.69	48.66	48.60	50.80
Trend	Index	100	86	86	90
Landed Price from Japan	Rs./Kg	46.95	90.92	-	-
Trend	Index	100	194	-	-

48. From the above table, it is evident that both the cost of production and net selling price increased during the POI as compared to the immediate preceding as well as the base year. However, the cost of sales has increased more than the selling price. At the same time the landed price of imports has declined during POI as compared to immediate preceding year. This signifies suppressing effect of dumped imports of the subject goods on the domestic industry's selling price.

Examination of other Injury Parameters

49. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and major injury indicators like volume and value of imports, capacity, output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern with market shares of various segments in the earlier section, other economic parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analyzed hereunder as follows:

Profit/loss, Return on Investment and Cash Flow

50. The return on investment, profit/loss before and after interest, return on investment and cash profit are shown in the table below:

Particulars	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI
Cost of production	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Index	100	120	96	128
Net selling Price	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Index	100	108	106	108
Profit/Loss	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Index	100.00	60	145	30
Profit/loss	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	109	175	48
Profit before Interest	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	112	154	65
Cash Profit		***	***	***	***
Trend	Indexed	100	105	135	72
Return on Capital Employed	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	98	122	42

51. From the above table, it is evident that both the cost of production and net selling price increased during the POI as compared to the immediate preceding as well as the base year. However, the cost of sales has increased more than the selling price. At the same time the landed price of imports has declined during POI as compared to immediate preceding year. However, the profit before interest, cash profit and return on investment declined in the POI.

Inventories

52. It is noted that inventories with the domestic industry have declined.

Particulars	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI
Average Stocks	MT	145.06	164.72	164.44	182.21
Average Stocks	Index	100	114	113	126

Employment, wages and productivity

53. It is noted that employment and wages have improved over the injury period and productivity has moved in tandem with production.

Particulars	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI
Employment	No	68	78	98	99
<i>Trend</i>	Indexed	100	114	143	144
Wages	Rs. Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	Indexed	100	139	167	179
Productivity per Employee	Mt	48.93	46.81	41.41	37.91
<i>Trend</i>	Indexed	100	96	85	77
Productivity per day	Mt	9.55	10.44	11.54	10.68
<i>Trend</i>	indexed	100	109	121	112

M. Growth

54. Although the domestic industry has shown positive growth in some of the economic parameters, the performance of the domestic industry in terms of both volume and price parameters in general have deteriorated in POI due to dumped imports.

Magnitude of Margin of Dumping

55. The Authority notes that the dumping margin determined in respect of imports from China PR is substantial. There are, however, no imports of the subject goods reported from Japan in the POI. The likely dumping margin from Japan is also positive.

Ability to raise Capital Investment

56. The Authority notes majority of the applicants constituting domestic industry in the present investigation are single-product concerns. Thus, should the dumping persist, ability of the domestic industry to raise capital would suffer.

N. Other Known factors and Causal Link:**Submissions by Domestic Industry**

57. The causal link has already been established in the original investigation. In the present sunset review investigation, the Hon'ble Designated Authority has to examine whether revocation of anti-

dumping duty would lead to continuation or recurrence of dumping and injury. Thus, an examination of whether cessation of anti-dumping duties would lead to continuation or recurrence of injury involves such an analysis that a positive finding would be recorded only if cessation of anti-dumping duties would lead to continuation or recurrence of injury. This clearly establishes that a positive finding of injury would be recorded only in case there is a relationship between cessation of anti-dumping duties and recurrence or continuation of injury.

58. There exists a causal relationship between the likelihood of continuation or recurrence of dumping and likelihood of continuation or recurrence of injury.

Examination by the Authority

Causal Link

59. Under Section 9A (5) of the Act, the Authority is required to examine the likelihood of dumping and injury and the need for continuation of duties. Notwithstanding this, the Authority examined whether other known factors could have caused injury to the domestic industry as follows:

- i. **Imports from Third Countries:** - Anti-dumping investigations on imports from Taiwan, Turkey and USA are in process. Imports from any other country are either below de-minimis or the import price is higher. Therefore, imports from any other country cannot have any adverse effect on the domestic industry.
- ii. **Contraction in Demand:** - The Authority notes that there is no contraction in demand as the demand of the subject goods in the country has consistently increased throughout the injury period.
- iii. **Pattern of consumption:** - It is noted that no significant change in the pattern of consumption for the subject goods has come to the knowledge of the Authority, nor any interested party has made any submission to that regard.
- iv. **Conditions of competition:-** The Authority notes that the investigation has not shown that conditions of competition or trade restrictive practices are responsible for the claimed injury to the domestic industry.
- v. **Developments in technology:** - The Authority notes that the investigation has not shown that there was any significant change in technology which could have caused injury to the domestic industry.
- vi. **Export performance:** The domestic industry has also made export sales of subject goods. However, the injury analysis has been done without including export performances of the domestic industry.

1045 (47) 13-9

O. Likelihood of Continuation or Recurrence of Injury

60. Following submissions have been made by the domestic industry with regard to likelihood of continuation or recurrence of injury :

- i. Producers in China PR maintain huge capacities to produce persulphates. In case of revocation of anti-dumping duty, the volume of subject goods' imports is bound to increase further.
- ii. The imports from subject countries declined after the imposition of duty. However, imports from China PR have once again increased in the POI. Such continued presence of dumped imports has prevented the domestic industry from fully recovering from past effects of dumping. In the event of cessation of current antidumping duty, the domestic industry will have to either reduce the price by the amount of ADD or will maintain the current selling price. In either case, it will suffer material injury.
- iii. The prices at which subject goods are being imported from China PR are substantially lower than the price at which the goods are being sold in the Indian market. Therefore, in case of expiry of duty, the exporters would further channelize their output in the Indian market as they are already holding excessive capacities and are in fact selling the subject goods to third countries at substantially lower prices.
- iv. Price undercutting in the absence of anti-dumping duty is significant in case of China PR.
- v. Japan is exporting the subject goods to third countries at the prices which are far below the selling price offered by the domestic industry. Petitioners submit that, it is due to the protection cover of the present anti-dumping duty that Japan is not dumping the subject goods in India. Cessation of anti-dumping duty would result in recurrence of dumping from Japan.
- vi. China has massive production capacity for the subject goods. The information given below in respect of only eight Chinese producers shows their collective capacity for the subject goods is 1,32,000 MT:

S.N.	Producers In China	Capacity (MT)
1	Shanghai Ansin Chemical Co., Ltd	5,000
2	Degussa-aj (Shanghai) Initiators Co.,Ltd	15,000
3	Fujian JianouYongsheng industry Co., Ltd	35,000
4	HebeiJiheng Group Co.,Ltd	27,000
5	HengshuiJiamu Chemical Co., Ltd.	18,000
6	Fulida Industry Co. Ltd.	15,000
7	ZHANHUA Chemicals Industrial Co. , Ltd.	27,000
8	ABC Chemicals (Shanghai) Co. Ltd.	6,000
	Total	1,32,000

- vii. Chinese producers also have significant unutilised capacities for the subject goods.
- viii. There is continued dumping of the product under consideration from China; Dumping of the product under consideration is likely to intensify from subject country, should the current anti-

- dumping duty be revoked.
- ix. Chinese imports have increased in absolute terms and in relation to production and consumption in India despite anti-dumping duty in force.
 - x. The domestic industry is still suffering injury from the imports of dumped imports; revocation of anti-dumping duty shall imply intensification of injury to the domestic industry.
 - xi. There is continued dumping from China and consequent injury to the Domestic Industry. Even if it is concluded that the domestic industry has not suffered injury, in any case, the performance of the domestic industry continues to be fragile. Further, dumping and consequent injury is likely to continue and intensify further, should the current anti-dumping duty cease.
 - xii. The following factors suggest the likelihood of injury to the Domestic Industry, should the present duty in force be revoked:

a). Excessive production capacity held by the Subject Country

- Producers/exporters in China are having excessive production capacities as shown in the table below. In case of cessation of the present duty, dumping from China would definitely increase and ultimately cause intensified volume and price injury to the Domestic Industry.

S.N.	Producers In China	Capacity (MT)
1	Shanghai Ansin Chemical Co., Ltd	5,000
2	Degussa-aj (Shanghai) Initiators Co.,Ltd	15,000
3	Fujian JianouYongsheng industry Co., Ltd	35,000
4	HebeiJiheng Group Co.,Ltd	27,000
5	HengshuiJiamu Chemical Co., Ltd.	18,000
6	Fulida Industry Co. Ltd.	15,000
7	ZHANHUA Chemicals Industrial Co. , Ltd.	27,000
8	ABC Chemicals (Shanghai) Co. Ltd.	6,000
	Total	1,32,000

5.) Vulnerability of the Domestic Industry

- Vulnerability of the domestic industry relates to whether the industry would be susceptible to material injury in the event of cessation of antidumping duty imposed. In such a situation, the authority must consider whether the industry will deteriorate further upon revocation or termination.
- In the instant case, the imports from subject countries reduced after the imposition of duty but it has once again increased in the POI. The extent of imports is significant in the POI. Such continued presence of dumped imports has prevented the domestic industry from fully recovering from past effects of dumping. In the event of cessation of current antidumping

duty, the domestic industry will have to either decrease the price by the amount of ADD or will maintain the current selling price. In either case, it will suffer material injury.

c). Price attractiveness of Indian market

- The prices at which subject goods are being imported from subject countries are substantially lower than the price at which the goods are being sold in the Indian market. Therefore, in case of expiry of duty, exporters would further channelize their output in the Indian market as they are already holding excessive capacities and are in fact selling subject goods to third countries at substantially lower prices.

d). Price undercutting in the absence of measures

- As submitted earlier, revocation of present anti-dumping duties would lead to significant price undercutting.

e.) Existence of anti-dumping duties in other countries on the same product

- China is attracting anti-dumping duties in US and Europe. US has concluded its second review against imports of Persulphates and imposed duty. The administrative review recently conducted by US has reconfirmed dumping by China and has imposed duty at the rate of 119.02 percent. Further, EU after revoking its 1995 antidumping duty order in April 2002 on persulphates from China, re-imposed those duties in October 2007. The current antidumping duty rate applicable to China is as high as 72 percent.
- Unless the exporters establish that dumping is unlikely to continue, intensify or recur in the event of revocation of anti-dumping duties, it must be held that the dumping would continue or recur or intensify in the event of revocation of anti-dumping duties. Since in the present case, the producers/exporters from the subject countries have not responded, likelihood of dumping and injury cannot be denied.

Examination by the Authority

61. The present investigation is a sun set review of anti-dumping duties imposed on the imports of subject goods from China PR and Japan. Under the Rules, the Authority is required to determine whether continued imposition of anti-dumping duty is warranted. This also requires examination of whether the duty imposed is serving the intended purpose of eliminating injurious dumping. In the present investigation, as there are continued dumped imports from China PR, the Authority is not required to examine whether revocation of duty is likely to lead to continued dumping of the product from China PR. However, considering the fact that the dumping margin in the original as well as the present investigation is significant and that there are favorable market conditions in the Indian market as far as demand and price for the subject goods are concerned, the Authority notes that dumping may continue if the duty is revoked in respect of China PR. It is a matter of fact that

despite the anti-dumping measures in force, China PR could maintain a significant presence in the Indian market to the detriment of the domestic industry.

62. The Authority notes that imports of product under consideration from the China PR remained significant over the current injury period in absolute terms. The imports of the subject goods from China PR continued to be at dumped prices inspite of existing anti-dumping duties. With regard to price effect, it is observed that imports were significantly undercutting and underselling the prices of the domestic industry without the anti-dumping duty. Even with anti-dumping duty, there is positive price undercutting effect from China PR. The analysis of various economic parameters shows that the overall economic health of the domestic industry had improved up to 2010-11 on account of the anti-dumping measures in force and then declined during POI as a result of dumped imports from China PR as well as fresh sources. In view of the above position, the Authority concludes that in the event of cessation of the anti-dumping measures, the dumping of subject goods from China PR is likely to continue causing injury to the domestic industry.
63. As regards Japan, the Authority notes that the volume of imports declined after the imposition of anti-dumping duty. In fact, there have been no imports from Japan in 2010-11 and the POI. However, on the basis of information available in the World Trade Atlas, the Authority notes that Japan has significant exports to other countries in the region of 7856 MT at an average price of *** US\$/MT during POI. The Authority further notes that during post POI, Japan has exported to third countries 4668 MT at an average price of US \$ ***/MT.
64. The Authority notes that there is no response from the producers/exporters of the subject goods from the subject countries. However based on information provided by the domestic industry and other available information, the Authority notes that the Chinese producers have substantial production capacity. Further, as submitted by the domestic industry, China PR is also attracting anti-dumping duty in US and Europe. Considering the substantial increase in demand in the Indian market during the period of investigation and considering continued dumping of the subject goods despite the anti-dumping duty in force, the Authority notes that cessation of the existing duty may result in continued dumping, causing injury to the domestic industry.
- P. Magnitude of injury and injury margin**
65. The non-injurious price of the subject goods produced by the domestic industry has been determined by the Authority in terms of Annexure III to the Anti-dumping Rules. The NIP so determined, has been compared with the landed value of the exports of subject goods from China PR for determination of injury margin during the POI and the likely injury margin in respect of Japan as under:

China PR

Particulars	UOM	APS	SPS	PPS	Weighted Average
Non-Injurious Price	Rs./Kg	***	***	***	***
Landed Price without ADD	Rs./Kg	46.54	72.88	-	50.80
Injury Margin	Rs./Kg	***	***	-	***
	US\$/Kg	***	***	-	***
	%	***	***	-	***
	Range	40-50	35-45	-	40-50

Japan

Particulars	UOM	Weighted Average
Non-Injurious Price	Rs./Kg	***
Landed Price without ADD	Rs./Kg	74.38
Likely Injury Margin	Rs./Kg	***
	US\$/Kg	***
	%	***
	Range	0-10

The Authority notes that the injury margin in respect of China PR and the likely injury margin in respect of Japan during POI are positive. Moreover, the likely injury margin from both the countries during the post POI period is also positive as per the table below:

Likely Injury Margin Post POI**China PR**

Particulars	UOM	
Non-Injurious Price	US \$/Kg	***
Landed Price without ADD	US \$/Kg	1.12
Injury Margin	US \$/Kg	***
Injury Margin	%	***
Injury Margin	Range	35-45

Japan

Particulars	UOM	
Non-Injurious Price	US \$/Kg	***
Landed Price without ADD	US \$/Kg	1.48
Injury Margin	US \$/Kg	***
Injury Margin	%	***
Injury Margin	Range	5-15

Q. Post- Disclosure Comments

66. The following are the post-disclosure comments made by the domestic industry:

- i. Product under consideration continues to be exported to India at dumping prices from China. Dumping and consequent injury to the domestic industry is likely to recur in case of imports from Japan.
- ii. Domestic industry has suffered continued injury in case of imports from China.
- iii. There exists a typographical error in the capacity figures mentioned with regard to Calibre Chemicals. The company has made significant additions to plant & machinery and building during this period.
- iv. The non injurious price determined is too low. Authority should consider actual raw material and utilities consumption and actual production. Capital employed should be determined considering present value of fixed assets, or at the least gross value of fixed assets.
- v. The same quantum of anti-dumping duties are required to be extended in view of significantly high dumping margin and injury margin in respect of exports to third countries.
- vi. The form of measure is required to be kept as fixed quantum and the currency of the anti-dumping duty is required to be modified to US\$.

Examination by the Authority

67. The Authority notes that except the domestic industry no other interested party has made any post-disclosure comment. The Authority further notes that most of the post-disclosure comments made by the domestic industry are merely reiterations of their earlier submissions. However, the comments made by the domestic industry considered relevant by the Authority are addressed below:

- i. As regards the claim of the domestic industry concerning capacity of M/s Calibre Chemicals, one of the domestic producers constituting domestic industry in the present

investigation, the Authority notes that the data/information of the concerned industry has been verified and the Authority has accepted and adopted the verified information.

- ii. As regards the contention of the domestic industry that the non injurious price (NIP) determined is too low, the Authority notes that the NIP has been determined as per the principles laid down in Annexure III of the Anti-dumping Rules.

R. Indian industry's Interest & Other Issues

68. The Authority recognizes that imposition of anti-dumping duties might affect the price level of product in India. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantage gained by dumping practices, would arrest the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. Consumers could still maintain one or even more sources of supply.
69. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

S. CONCLUSIONS

70. Having regard to the contentions raised, information provided and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority as recorded in this final finding and on the basis of the above analysis of the state of continuation of dumping and consequent injury and likelihood of continuation/recurrence of dumping and injury, the Authority concludes that:
 - i. Imports from China PR have increased over the injury period and continue to command a significant share;
 - ii. Volume of dumped imports from China PR is quite significant in relation to production and consumption in India;
 - iii. There has been continued dumping of the subject goods from China PR and the dumping is likely to continue if the anti-dumping duty is allowed to cease.
 - iv. Price undercutting and price underselling effect without anti-dumping duty are significantly positive;

vi. Although the domestic industry has shown positive growth in some of the economic parameters, the performance of the domestic industry in terms of both volume and price parameters in general have deteriorated in POI due to dumped imports.

viii. The subject goods are entering the Indian market at dumped prices from China PR and the dumping margin is above de-minimis. Should the present anti-dumping duties be revoked, dumping of the subject goods may continue causing injury to the domestic industry.

ix. As regards Japan, the Authority notes that the volume of imports declined after the imposition of anti-dumping duty. In fact, there have been no imports from Japan in 2010-11 and the POI. However, considering the magnitude and price of Japan's exports of subject goods world over, in the event of revocation of antidumping duty, the subject goods are likely to be dumped in India causing injury to the domestic industry.

x. During the post-POI, the dumping margin and injury margin in respect of China PR has reduced as compared to the POI. As regards Japan, although the imports continue to be Nil during the post-POI period, the likely dumping margin and likely injury margin determined on the basis of Japan's third country exports indicate more intensified dumping and injury as compared to similarly determined dumping margin and injury margin for the POI.

T. Recommendations

71. Having concluded as above, the Authority is of the view that the anti-dumping measure is required to be revised and extended in respect of imports of the subject goods, originating in or exported from China PR, as specified in the duty table below.

72. As regards Japan, having concluded that there is likelihood of resumption of dumping and injury on account of imports of the subject goods, originating in or exported from Japan, in the event of revocation of the anti-dumping duty, the Authority is of the view that the anti-dumping measure, as recommended earlier vide Final Finding Notification No. 14/1/2006 --DGAD dated 20th July, 2007 and imposed by the Central Government vide Notification No. 96/2007-Customs dated 29th August, 2007 [validity extended vide Notification No. 20/2010-Customs (ADD) dated 4th April, 2012], is required to be extended.

73. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, in respect of China PR, the Authority recommends imposition of anti-dumping duty equal to the lesser of the margin of dumping and the margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry, as specified in the duty table below. As regards Japan, the Authority recommends extension of the extant anti-dumping duty imposed earlier by the Central Government vide Notification 96/2007-Customs dated 29th August, 2007 [validity extended vide Notification No. 20/2010-Customs (ADD) dated 4th April, 2012] as specified in the duty table below.

Duty Table

S.No.	Heading/ Subheading	Description of goods *	Specification	Country of Origin	Country of Exports	Producer	Exporter	Duty Amount	Unit	Currency
(1)	(2)	(3)		(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1.	2833 40 00	Peroxosulphates or Persulphates	Ammonium Persulphates, Potassium Persulphates or Sodium Persulphates	China PR	China PR	Any	Any	420	MT	US \$
2	2833 40 00	Peroxosulphates or Persulphates	Ammonium Persulphates	China PR	Any	Any	Any	420	MT	US \$
3	2833 40 00	Peroxosulphates or Persulphates	Ammonium Persulphates	Any	China PR	Any	Any	420	MT	US \$
4	2833 40 00	Peroxosulphates or Persulphates	Ammonium Persulphates	Japan	Japan	Any	Any	822	MT	US \$
5	2833 40 00	Peroxosulphates or Persulphates	Ammonium Persulphates	Japan	Any	Any	Any	822	MT	US \$
6	2833 40 00	Peroxosulphates or Persulphates	Ammonium Persulphates, Potassium Persulphates or Sodium Persulphates	Any	Japan	Any	Any	822	MT	US \$

U. Further Procedures

74. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs Authority under the Customs Act, 1962 and all duties of Customs except duties levied under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

75. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

J. S. DEEPAK, Designated Authority